।। ॐ विष्णवै नमः ।।

शब्दवाणी

अथ गोत्राचार प्रारम्भ

ओउम् जदूवासरूपम् पूज्यत्रम् सामनिधिम् गुणनिधिम्। आकाश पितरम्। सतारामम्। पंचम पाताल मुखम्। वरूण ते शिव मुखम्।1। श्रीपार्वत्युवाच कस्मिन्मासे। कस्मिन् पक्षे। कस्मिन् तिथौ। कस्मिन्वासरे। कस्मिन् नक्षत्रे। कस्मिन् लग्ने। उत्पन्नोऽसौ।2। श्री महादेवउवाच। आषाढ मासे कृष्ण पक्षे, अर्द्धरात्रौ। मीनलग्ने चतुर्दश्यां शनिवासरे, रोहिणी नक्षात्रे, ऊर्ध्वमुखे, दृष्टपाताले, अगोचरन्नामाग्निः।3। श्रीपार्वत्युवाच। कातस्य माता क्कतस्य पिता क्कतस्य गोत्रः कति जिह्वा प्रकाशित।4। श्रीमहादेव उवाच। अरणस माता वरूणस्पिता, शाण्डिल्यगोत्रे, वनस्पतिपुत्रम् पावकनामकम् वसुन्धरम्।5। चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य। त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति

महोदेवोमित्यां आविवेश ।6। निखिलब्रह्माण्डमुदरे यस्य द्वादश लोचनम्। सप्त जिह्वा। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता य च सुधूम्रवर्णा स्फुलिगिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वा ।8। प्रथमस्तु घृतम् द्वितीये यवम्। तृतीये तिलम्। चतुर्थे दधि। पंचमे क्षीरम्। षष्ठे श्रीखंडम्। सप्तमे मिष्टानम्। एतानि सप्तअग्नेर्भोजनानि। एतै: सप्तजिह्वा। प्रकाश्यन्ते ।9। ऊर्ध्वमुखा धोमुखा भिमुखै: साहायं करोति। घृतमिष्ठान्नादि पदार्था: महाविष्णु मुखे प्रविशान्ति। सर्वे देवा ब्रहमा विष्णु: महेश्वरादयस्तृप्यन्ति ।10।

ऋग्वेद मन्त्र

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्न धातमम् ।1 । अग्नि: पूर्वेभिऋषिभिरीड्यो नूतनै ! रूत स देवां एह वक्षति ।2। अग्निना रयिमश्नवत्पौषमेव दिवे

दिवे। यशसं वीर वतमम्।3। अग्नेयं यज्ञ मध्वंर विश्वत:परि भूरसि। सइदेवेषु गच्छति।4। अग्निहोंताकविक्रतु: सत्यश्चित्रश्रावस्तम: देवोदेवेभिरागमद्। 5। यदंगदाशुषे त्वमग्नेभद्रंकरिष्यसि। तवेत्तत सत्यमंगिर:।6। उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तधिंया वयम्। नमो भरंत एमसि।7। राजंतमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् वर्धमानंस्वेदमे।8। स न: पितेव सूनवे अग्नेसूपायनो भव सचस्वा न: स्वस्तये।9।

वेदों के मन्त्र

ओ३म् शन्नो मित्र: शं वरूण: शन्नो भवर्त्य मा। शन्न इन्द्रो वृहस्पति: शन्नो विष्णु रूरूक्रम:।1। ओ३म् नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु

वक्तारम् ।2। यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।3। ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्वां सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।4। ओ३म् सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा साविश्वधाया इन्द्रस्यत्वा भागै सोमेना तनच्मि विष्णोहव्यंरक्ष ।5। ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद भद्रं तन्न आसुव। यजु0। ओ३म् भूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रातः सांयकाल होम मन्त्र

ओं अग्नेय स्वाहा ।1। ओं सोमाय स्वाहा ।2। ओं प्रजापतये स्वाहा ।3। ओं इन्द्राय स्वाहा ।4। ओं सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ।1। ओं सूर्य्यो। वर्चो

ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।2 । ओं ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योति स्वाहा ।3 । ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्योवेत्तु स्वाहा ।4 । ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि स्वाहा ।1 । ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।2 ।ओं अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्नि स्वाहा । 3 । ओं सजूर्देवेन सवित्रा, सजु रात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणों अग्निर्वेतु स्वाहा ।4 ।ओ भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।1 । ओं भुवर बायवेऽपानाय स्वाहा ।2 । ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।3 । ओं भूर्भुवः स्वरिग्न वाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।4 । ओं आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।5 । ओं यां मेधां देवगणां पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा ।6 ।ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।7 ।

शब्द - (1)

ओ३म्–गुरू चीन्हों गुरू चीन्ह पुरोहित, गुरू मुख धर्म बखाणीं। जो गुरू होयबा सहजे शीले शब्दे नादे वेदे तिहिं गुरू का आंलिकार पिछाणी। छव दरशण जिहिं कै रूपण, थापण, संसार बरतण, निज कर थरप्या, सो गुरू प्रत्यक्ष जाणी। जिहिं कै खर तर गोठ निरोत्तर वाचा, रहिया रूद्र समाणी। गुरू आप संतोषी, अवरां पोखी, तत महारस बाणी। के के अलिया बासण,होत हुताशण, तामैं क्षीर दुहीजूँ। रसूवन गोरस, घीय न लीयूं, तहां दूध न पाणी। गुरू ध्याईये रे ज्ञानी,तोड़त मोहा, अति खुरसांणी छीजत लोहा। पांणी छल तेरी खाल पखाला,सतगुरू तोड़े मन का साला। सतगुरू है तो, सहज पिछाणी, कृष्ण चरित बिन काचै करवै रहयो न रहसी पांणी।

शब्द - (2)

ओ३म्–मोरे छाया न माया, लोहू न माँसू,रक्तूं न धातूं, मोरे माई न बापूँ, आपण आपू, रोही न रापूँ, कोपूँ न कलापूँ, दुःख न सरापूँ। लोई अलोई, त्यूँह तृलोई, ऐसा न कोई जपां भी सोई, जिहिं जंपे आवागवण न होई। मोरी आद न जाणत, महीयल धूँवा बखाणत। उरध ढाकले तृसूलूँ। आद अनाद तो हम रचीलो, हमे सिरजीलो सै कोण? म्हे जोगी कै भोगी, कै अल्प अहारी, ज्ञानी कै घ्यानी, कै निज कर्म धारी। सोखी कै पोखी, कै जल बिंब धारी, दया धर्म थापलै निज बाला ब्रह्मचारी।

शब्द - (3)

ओ३म्–मोरै अंग न अलसी, तेल न मलियो, ना परमल पीसायों। जीमत पीवत भोगत बिलसत दीसां नाहीं, म्हापण को आधारूं। अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर,

बाहर लोका चारूँ। नान्हीं मोटी जीया जूँणी, एती सास फुरंतै सारूं। बासंदर क्यूँ एक भणीजै, जिहिं कै पवन पिराणों। आला सूका मेल्है नाहीं, जिहिं दिश करै मुहाणों। पापे गुन्हे वीहै नाहीं, रीस करै रीसाणों।। बहूली दौरे लावण हारूं, भावै जाण मैं जाणूं। न तूं सुरनर, न तूं शंकर, न तू राव न राणों। काचै पिंड अकाज चलावै, महा अधूरत दाणों। मौरे छुरी न धारूं, लोह न सारूं न हथियारूं। सूरज को रिप बिहंडा नाहीं, तातै कहां उठावत भारूं। जिहिं हाकणड़ी बलद जू हाकै न लोहै की आरूं।

शब्द - (4)

ओ३म्–जद पवन न होता, पाणी न होता, न होता धर गैणारूं। चंद न होता, सूर न होता, न होता गिंगदर तारूं। गउ न गोरू माया जाल न होता, न होता हेत पियारूं। माय न बाप न बहण न भाई, साख न सैंण न होता, न

होता पख परवारूं। लख चौरासी जीया जूणी न होती, न होती वणीं अठारा भारू। सप्त पताल फुँणीद न होता, न होता सागर खारूं। अजिया सजिया जीया जूणी न होती, न होती कुड़ी भरतारूं। अर्थ न गर्थ न गर्व न होता, न होता तेजी तुरंग तुखारूं। हाट पटण बाजार न होता। न होता राज दवारूं। चाव न चहन न कोह का बांण न होता, तद होता एक निरंजन शिम्भू, कै होता धंधू कारू। बात कदो की पूछै लोई, जुग छत्तीस बिचारूं। ताह परैरे अवर छत्तीसूं, पहला अंत न पारूं। म्हे तदपण होता, अब पण आछै, बल-बल होयसां, कह कद कद का करूं विचारूं।

शब्द - (5)

ओ३म्-अइया लो अपरंपर बांणी,म्हे जपां न जाया जीऊं। नवअवतार नमोनारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं। जती तपी तक पीर ऋषेश्वर, कांय जपीजै तेपण

जाया जीऊं। खेचर भूचर खेत्रपाला परगट गुप्ता, कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। वासग शेष गुणिंदा फुणिंदा, कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। चौसट जोगिन बावन बीरूं, कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। जपां तो एक निरालंभ शिंभु, जिहिं कै माई न पीऊं। न तन रक्तूँ, न तन धातूँ, न तन ताव न सीऊं। सर्व सिरजत, मरत बिवरजत, तासन मूलज लेणा कीयों। अइयालों अपरंपर बाणी, म्हे जपां न जाया जीऊं।

शब्द - (6)

ओ३म्–भवन भवन म्हे एका जोती, चुण चुण लीया रतना मोती। म्हे खोजी थापण होजी नाहीं, खोज लहां धुर खोजूँ। अल्लाह अलेख अडाल अजोनि स्वयंभू, जिहि का किसा बिनाणी। म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरत सुरत सब जाणी। उतपति हिंदू जरणा जोगी, किरिया ब्राह्मण, दिल दरवेंसा, उन मुन मुल्ला, अकल

मिसलमानी।

शब्द - (7)

ओ३म्–हिंदू होय के हरि क्यूँ ना जंप्यो, कांय दहदिश दिल पसरायों। सोम अमावस आदित वारी, कांय काटी बनरायों। गहण गहंतै, बहण बहंतै, निर्जल ग्यारस मूल बंहतै, कांयरे मुरखा तैं पालंग सेज निहाल बिछाई। जादिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया, जाण कै भागी कपिला गाई। कूड़तणों जे करतब कीयो, नातैं लाव न सायों। भूला प्राणी आल बखाणी, न जंप्यो सुर रायों। छंदै कहां तो बहुता भावै, खरतर को पतियायों। हिव की बेलां हिय न जाग्यो, शंक रह्यो कंदरायों। ठाढी बेला ठार न जाग्यो, ताती बेलां तायों। बिम्बै बेलां विष्णु न जंप्यो, ताछै का चीन्हों कछु कमायों। अति आलस भोला वै भूला, न चीन्हो सुररायों। पारब्रह्म की सुध न जाणीं, तो नागे जोग न पायों। परशुराम कै अर्थ

न मूवा, ताकीं निश्चै सरी न कायों।

शब्द - (४)

ओ३म्–सुण रे काजी, सुण रे मुल्ला, सुण रे बकर कसाई। किणरी थरपी, छाली रोसो, किणरी गाडर गाई। सूल चुभीजै, करक दुहेली, तो है है जायो जीव न घाई। थे तुरकी छुरकी ,भिस्ती दावो, खायबा खाज अखाजूँ। चर फिर आवै, सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली। जिसके गले करद क्यूं सारो, थे पढ सुण रहिया खाली।

शब्द - (९)

ओ३म्–दिल साबत हज काबो नेड़ो, क्या उलबंग पुकारो। भाई नाऊं बलद पियारो, ताकै गलै करद क्यूं सारो। बिन चीन्हैं खुदाय बिबरजत, केहा मुसलमानो। काफर मुकर होयकर राह गुमायो, जोय जोय गाफल करै धिंगाणों। ज्यू थे पछिम दिशा उलबंग पुकारो,

भलजे यों चीन्हों रहमाणों। तो रूह चलंतै पिण्ड पड़ंतै, आवै भिस्त विमाणो। चढ चढ भींते मड़ी मसीते, क्या उलबंग पुकारो। कांहे काजै गऊ बिणासो, तो करीम गऊ क्यूँ चारी। काहीं लीयूं दूधूं दहियूं, काहीं लीयू घीयूँ महियूं,काहीं लीयू हाडू मासूं, काही लीयूँ रक्तूं रूहियूं। सुणरे काजी सुणरे मुल्लां, यामै कौण भया मुरदारूं। जीवां ऊपर जोर करीजै, अंतकाल होयसी भारूं।

शब्द - (10)

ओ३म्–बिसमिल्ला रहमान रहीम, जिहिंकै सदकैं भीना भीन। तो भेटीलो रहमान रहीम, करीम काया दिल करणी। कलमा करतब कौल कुराणों। दिल खोजो दरबेश भईलो, तइया मुसलमाणों। पीरां पूरषां जमी मुसल्लां,कर्तब लेक सलामों। हम दिल लिल्ला, तुम दिल लिल्ला, रहम करैं रहमाणों। इतने मिसले, चालो मीयां,

तो पावो भिस्त इमाणों।

शब्द - (11)

ओ३म्–दिल साबत हज काबो नेड़ो, क्या उलबंग पुकारो। सीने सरवर करो बंदगी, हक निवाज गुजारो। इंहि हेड़ै हरदिन की रोजी, तो इसही रोजी सारो। आप खुदाबंद लेखो मांगै, रे बिनही गुन्हैं जीव क्यूं मारो। थे तक जाणो तकपीड़ न जाणों, बिन परचै बाद निवाज गुजारो। चर फिर आवै सहज दुहावै, जिसका खीर हलाली, तिसके गले करद क्यूं सारो, थे पढ सुण रहिया खाली। थे चढ चढ भींते मड़ी मसीते, क्या उलबंग पुकारो। कारण खोटा करतब हींणा, थारी खाली पड़ी नमाजूँ। किहिं ओजू तुम धोवो आप, किहिं ओजू तुम खंडो पाप। किहिं ओजू तुम धरो धियान, किहिं ओजू चीन्हों रहमान। रे मुल्ला मन मांहि मसीत नमाज गुजरिये, सुणता ना क्या खरै पुकरियै। अलख न लखियो खलक

पिछाण्यो, चांम कटे क्या हुइयों। हक्क हलाल पिंछाण्यों नाहीं, तो निश्चै गाफल दोरै दीयों।

शब्द - (12)

ओ३म्–महमद–महमद न कर काजी, महमद का तो विषम विचारूं। महमद हाथ करद जो होती, लोहे घडी़ न सारूं। महमद साथ पयबंर सीधा, एक लख असी हजारूं। महमद मरद हलाली होता, तुम ही भए मुरदारूं।

शब्द - (13)

ओ३म्–कांयरे मुरखा, तैं जन्म गुमायों, भुंय भारी ले भारूं।जादिन तैरे होमनै, जपनै, तपनै किरिया, गुरू न चीन्हों पंथ न पायों अहल गइ जमवारूं। ताती बेला ताव न जाग्यो, ठाढी बेला ठारूं। बिंबै बैला विंष्णु न जंप्यो, तातै बहुत भई कसवारूं। खरी न खाटी देह बिणाठी, थिर न पवना पारूं। अहनिश आव घटंती

जावै, तेरे स्वास सबी कसवारूं। जां जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो, ते नर कुबरण कालू। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ते नगरे कीर कहारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, कांध सहै दुखः भारूं। जा जन मंत्र, विष्णु न जंप्यो, ते घण तण करै अहारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ताको लोही मांस बिकारू। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, गावै गाडर सहरे सूवर, जन्म-जन्म अवतारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ओडां कै घर पोहण होयसी, पीठ सहै दुख भारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, राने बासो मोनी बैसे, ढूकै सूर सवारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ते अचल उठावत भारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ते न उतरिबा पारूं। जा जन मन्त्र, विष्णु न जंप्यो, ते नर दौरे घुप अंधारूं। तातैं तंत न मंत न जड़ी न बूंटी, ऊंडी पड़ी पहारूं। विष्णु न दोष किसो रे प्राणी, तेरी करणी का उपकारूं।

शब्द - (14)

ओ३म्–मोरा उपख्यान वेदूं,कण तंत भेंदू, शास्त्रे पुस्तके लिखणा न जाई। मेरा शब्द खोजो, ज्यूँ शब्दे शब्द समाई। हिंरणा दोह क्यूँ हिरण हतीलूँ, कृष्ण चरित बिन क्यूँ बाघ विडारत गाई। सुनही सुनहा का जाया, मुरदा बघेरी बघेरा न होयबा, कृष्ण चरित बिन, सींचाण कबहीं न सुजीऊं। खर का शब्द न मधुरी बाणी, कृष्ण चरित बिन, श्वान न कबही गहीरूं। मुण्डी का जाया, मुंडा न होयबा, कृष्ण चरित बिन, रीछं कबही न सुचीलूं। बिल्ली की इन्द्री संतोष न होयबा, कृष्ण चरित बिन, काफरा न होयबा लीलूं। मुरगी का जाया मोरा न होयबा, कृष्ण चरित बिन, भाकला न होयबा चीरूं। दंत बिवाई जन्म न आई, कृष्ण चरित बिन, लोहै पड़े न काठ की सूलूं। नींबड़िये नारेल न होयबा, कृष्ण चरित बिन, छिलरे न होयबा हीरूं।

तूंबण नागर बेल न होयबा, कृष्ण चरित बिन, बावली न केली केलूं। गऊ का जाया खगा न होयबा, कृष्ण चरित बिन, दया न पालत भीलूँ। सूरी का जाया हस्ती न होयबा, कृष्ण चरित बिन, ओछा कबही न पूरूं। कागण का जाया कोकला न होयबा, कृष्ण चरित बिन, बुगली न जनिबा हंसू। ज्ञानी कै हृदय प्रमोद आवत, अज्ञानी लागत डांसू।

शब्द - (15)

ओ३म्-सुरमा लेणां झींणा शब्दूँ, म्हे भूल न भाख्या थूलूँ। सो पति बिरखा सींच प्रांणी, जिहिंका मीठा मूल समूलूँ। पाते भूला मूल न खोजे, सींचौ कांय कु मूलूँ। बिष्णु-विष्णु भण अजर जरीजै,यह जींवन का मूलूँ। खोज प्रांणी ऐसा बिनाणी, केवल ज्ञानी, ज्ञान गहीरूं। जिहिं कै गुणे न लाभत छेहूं, गुरू गेंवर गरवा शीतल नीरूं, मेवा ही अति मेऊं। हिरदै मुक्ता कमल संतोषी,

टेवा ही अति टेऊं। चड़ कर बोहिता भव जल पार लंघावै, सो गुरू खेवट खेवा खेंहूं।

शब्द - (16)

ओ३म्–लोहै हूंता कंचन घड़ियों, घड़ियों ठाम सुठाऊं। जाटां हूंता पात करीलूं, यह कृष्ण चरित परिवाणों। बेड़ी काठ संजोगे मिलिया, खेवट खेवा खेहूं। लोहा नीर किसी बिध तरिबा, उत्तम संग सनेहुं। विन किरिया रथ बैसेंला, ज्यूं काठ संगीणी लोहा नीर तरीलूं। नांगड़ भागंड़ भूला महियल, जीव हतै मड़ खाईलो।

शब्द - (17)

ओ३म्–मोरै सहजै सुन्दर, लोतर बाणी, ऐसो भयो मन ज्ञानी। तइया सासू, तइया मासूं, रक्तूं रूहीयूं। खीरूं नीरूं, ज्यूं कर देखूं, ज्ञान अंदेसू। भूला प्राणी कहै सो करणो। अइ अमाणो, तत समाणो, अइया लो म्हे पुरष न लेणा नारी। सो दत सागर सो सुभ्यागत, भवन–भवन

भिखियारी। भीखी लो भिखियारी लो, जे आदि परमतत लाधो। जाकै बाद बिराम विरांसो सांसौ, ताने कौन कहसी साल्हिया साधु।

शब्द - (18)

ओ३म्–जांकुछ जांकुछ, जां कछू न जांणी। नाकुछ नाकुछ, तां कुछ जांणी। नाकुछ नाकुछ अकथ कहांणी, नांकुछ नांकुछ अमृत बाणी। ज्ञानी सो तो ज्ञानी रोवत, पढिया रोवत गाहे। केल करन्ता मोरी मोरा रोवत, जोय जोय पगां दिखाही। उरध खैंणी मन उनमन रोवत, मुरखां रोवत धाहीं। मरणत माघ संघारत खेती, कै कै अवतारी रोवत राही। जड़िया बूंटी जे जग जीवै, तो बेदां क्यूं मर जाही। खोज पिरांणी ऐसा बिनाणीं, नुगरा खोजत नाहीं। जां कुछ होता, ना कुछ होयसी, बल कुछ होयसी ताहीं।

शब्द - (19)

ओ३म्–रूप अरूप रमूं, पिण्डे ब्रह्मण्डे, घट घट अघट रहायों। अनन्त जुगां मैं अमर भणीजूं , ना मेरे पिता न मायों। ना मेरे माया, न छाया, रूप न रेखा, बाहर भीतर अगम अलेखा। लेखा एक निरंजन लेसी, जंहा चीन्हों ,तहां पायों। अड़सठ तीर्थ, हिरदा भीतर, कोई कोई गुरूमुख बिरला न्हायो।

शब्द - (20)

ओ३म्–जां जां दया न मया, तां तां बिकरम कया। जां जां आव न वैंसु, तां तां सुरग न जैसुं। जां जां जीव न जोती, तां तां मोख न मुक्ति। जां जां दया न धर्मू, तां तां बिकर्म कर्मू। जां जां पाले न शीलूं, तां तां कर्म कुचीलूं। जां जां खोज्या न मूलूं, तां तां प्रत्यक्ष थूलूं। जां जां भेद्या न भेदू, तो सूरगे किसी उमेंदू। जां जां घमण्डै से घमण्डू, ताकै तावन छायो, सूतै सास नसायों।

शब्द - (21)

ओ३म्–जिहिं कै सार असारूं, पार अपारूं। थाघ अथाघूं, उमग्या समाघूं, ते सरवर कित नीरूं। बाजालो भल बाजालो, बाजा दोय गहीरूं। एकण बाजै नीर बरसै, दूजै मही बिरोलत खीरूं। जिहिं कै सार असारूं, पार अपारूं, थाघ अथाघूं, उमग्या समाघूं, गहर गंभीरूं, गगन पयाले, बाजत नादूं। माणक पायो, फेर लुकायो, नहीं लखायो। दुनियां राति बाद विवादूं, बाद बिवादे दांणू खीणा। ज्यूं पूहपे खींणा भंवरी भंवरा, भावैं जाण म जांण पिराणी, जोलै का रिप जवरा। भेर बाजातो एक जोजनौ अथवा दोय जोजनौ। मेघ बाजातो पंच जोजनौ अथवा दस जोजनौ। सोई उत्तम लेरे प्राणी, जुगां जुगांणी सत करि जांणी, गुरू का शब्द ज्यूं बोलो झींणी बाणी। जिहिं का दूरां हूंतै दूर सुणीजै, सो शब्द गुणा कारूं, गुणा सारूं बले अपारूं।

शब्द - (22)

ओ३म्–लो लो रे राजिंदर रायों, बाजै बाव सुवायों, आभै अमी झुरायो। कालर करसण कीयों, नेपै कछू न कायों। अइया उत्तम खेती,को को इमृत रायो। को को दाख दिखायों, को को ईख उपायों। को को नींब निबोली, को को ढाक ढकोली। को को तूषण तूंबण बेली, को को आक अकायों, को को कछू कमायों। ताका मूल कुमूलू, डाल कुडालूं, ताका पात कुपातूं, ताका फल बीज कुबीजूं, तो नीर दोष किसायों। क्यूं क्यूं भएभागे ऊंणा, क्यूं क्यूं कर्म बिहूंणा। को को चिड़ी चमेड़ी, को को उल्लू आयों। ताकै ज्ञान न जोती, मोक्ष न मुक्ति। याके कर्म इसायों, तो नीरे दोष किसायों।

शब्द - (23)

ओ३म्–साल्हिया हुवा मरण भय भागा, गाफिल मरणै

घणा डरै। सतगुरू मिलियो सत पंथ बतायो, भ्रान्त चुकाई, मरणै बहु उपकार करै। रतन काया सोभंति लाभै, पार गिराये जीव तिरै। पार गिराये सनेही करणी, जंपो विष्णु न दोय दिल करणी। जंपो विष्णु न निंदा करणी, मांडो कांध विष्णु कै सरणै। अतरा बोल करो जे साचा, तो पार गिरायं गुरू की वाचा। रवणां ठवणां चवरां भवणां, ताहि परे रै रतन काया छै, लाभै किसे विचारे। जे नवीये नवणीं, खवीये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणीं, तो सीख हुवा घर जाइये। रतन काया सांचे की ढाली, गुरू प्रसादे केवल ज्ञाने, धर्म अचारे, शीले संजमे, सतगुरू तूठे पाइये।

शब्द - (24)

ओ३म्–आसण बैसण कूड़ कपट्टण, कोई कोई चींन्हत वोजू बाटे। वोजू बाटे जे नर भया, काचीं काया छोड़ कैलाशे गया।

शब्द - (25)

ओ३म्–राज न भूलीलो, राजेन्द्र, दुनी न बंधै मेरूं। पवणा झोलै बीखर जैंला, धुंवर तणाजैं लोरूं। वोलस आभै तणा लहलोरूं, आडा डम्बर केती बार बिलम्बण यो संसार अनेहूं। भूला प्राणी विष्णु न जंप्यो, मरण विसारो केहूं। म्हां देंखता देव दाणूं, सुर नर खीणा, जंबू मंझे राचि न रहिबा थेहूं। नदिये नीर न छीलर पाणी, धूंवर तणा जे मेहूं। हंस उड़ाणो, पंथ बिलंब्यो, आसा सास निरास भईलो, ताछै होयसी रंड निरंडी देहूं। पवणा झोलै, बीखर जैला, गैंण बिलंबी खेहूं।

शब्द - (26)

ओ३म्–घण तण जीम्या, को गुण नाहीं, मल भरिया भण्डारूं। आगै पीछै माटी झूलै, भूला बहैज भारूं। घणा दिना का बड़ा न कहिबा, बड़ा न लंघिबा पारूं। उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारूं।

गोरख दीठां सिद्ध न होयबा, पोह उतरबा पारूं। कलजुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारूं। सतगुरू मिलियो सत पंथ बतायो, भ्रांत चुकाई बिदगा रातैं उदगा गारूं।

शब्द - (27)

ओ३म्–पढ़ कागल वेदूं, शास्त्र शब्दूं, पढ सुन रहिया, कछु न लहिया। नुगरा उमग्या, काठ पखाणो, कागल पोथा ना कुछ थोथा, ना कछु गाया गीऊं। किण दिश आवै, किण दिश जावै, माई लखै न पीऊं। इंडे मध्ये पिण्ड उपन्ना, पिण्डा मध्ये बिम्ब उपनां, किण दिस पैठा जीऊं। इण्डा मध्ये जीव उपन्ना। सुणरे काजी सुणरे मुल्लां, पीर ऋषेश्वर रेमस वासी, तीरथ वासी किण घट पैठा जीऊं। कंसा शब्दे कंस लुकाई, बाहर गई न रीऊं। क्षिण आवै क्षिण बाहर जावै, रूत कर बरसत सीऊं। सोवन लंक मंदोदर काजै, जोय–जोय भेद विभीषण

दीयों। तेल लियो खल चोपै जोगी, तिहिंको मोल थोड़े रो कीयों। ज्ञाने ध्याने नादे वेदे जे नर लेणा, तंत भी ताही लीयों। करण दधीचि सिवर बलि राजा, हुई का फल लीयों। तारादे रोहितास हरिचन्द, काया दशबन्ध दीयों। विष्णु अजंप्या जनम अकारथ, आके डोडा खींपे फलीयो। काफर बिबरजत रूहीयूं, सेंतू भांतू बहु रंग लेणा, सब रंग लेणा रूहीयूं। नानारे बहु रंग न राचै, काली ऊंन कुजीऊं। पाहे लाख मजीठी राता, मोल न जिहिं का रूहीयूं। कब ही वो ग्रह ऊथरि आवै, शैतानी साथे लीयों। ठोठ गुरू वृषलीपति नारी, जद बंकै जद बीरूं। अमृत का फल एक मन रहिबा, मेवा मिष्ट सुभायों। अशुद्ध पुरूष वृष लीपति नारी, बिन परचे पार गिराय न जाई। देखत अन्धा सुणता बहरा, तासों कछु न बसाई।

शब्द - (28)

ओ३म्–मच्छी मच्छ फिरै जल भीतर, तिहिं का माघ न जोयबा। परम तत है ऐसा,आछै उरबार न ताछै पारूं। ओवड़ छेवड़ कोई न थीयों, तिहिं का अन्त लहीबा कैसा। ऐसा लो भल ऐसा लो, भल कहो न कहा गहीरूं। परम तत कै रूप न रेखा, लीक न लेहूं, खोज न खेहूं, बर्ण बिबरजत, भावै खोजो बावन बीरू। मीन का पंथ मीन ही जांणै, नीर सुरंगम रहीयूँ। सिध का पंथ कोई साधु जाणत, बीजा बरतन बहियों।

शब्द - (29) (इलोल सागर)

ओ३म्–गुरू कै शब्द असंख्य प्रबोधी, खारसमंद परीलो। खारसमंद परै परेरै, चोखडं खारूं, पहला अंत न पारूं। अनन्त क्रोड़ गुरू कीं दावण बिलम्बी, करणी साच तरीलो। सांझे जमों सबेरे थापण, गुरू की नाथ डरिलो। भगवीं टोपी थल शिर आयो, हेत मिलाण

करीलो। अंबाराय बधाई बाजै, ह्रदय हरि सिंवरीलो। कृष्ण माया चोखडं कृषाणी, जम्बू दीप चरीलो। जम्बूदीप ऐसो चर आयो, इसकन्दर चेतायो। मान्यो शील हकीकत जाग्यो, हक की रोजी धायों। ऊंनथ नाथ कुपह का पोहमा आण्या, पोहका धुर पहुंचायों। मोरै धरती ध्यान बनस्पति बासो, ओजू मंडल छायों। गीदूं मेर पगांणै परबत, मनसा सोड़ तुलायों। ऐजुग चार छतीसां और छतीसा। आसंरा बहै अंधारी, म्हे तो खड़ा बिहायों। तेतीसां की बरग बहां म्हे, बारां काजै आयों। बारा थाप घणा न ठाहर मतांतो डीले डीले कोड़ रचायों। म्हे ऊंचै मण्डल का रायों। समन्द बिरोल्यो बासग नेतो, मेर मथांणी थायों। संसा अर्जुन मारयो कारज सारयो, जद म्हे रहस दमामा बायो। फेरी सीत लई जद लंका, तद म्हे ऊथे थायों। दह सिर का दश मस्तक छेद्या, बाण भला निरतायों। म्हे खोजी थापण

होजी नाही, लह लह खेलत डायों। कंसा सुरसूँ जूवै रमियां, सहजे नन्द हरायों। कूंत कुंवारी कर्ण समानो, तिहिंका पोह पोह पड़दा छायों। पाहे लाख मजीठी पाखो, बन फल राता पींझू, पाणी के रंग धायों। तेपण चाखन चाख्या, भाखन भाख्या। जोय जोय लियो फल फल केर रसायों। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या, न चीन्हों सुर रायों। कण बिन कूकस कांय पीसो, निश्चै सरी न कायो। म्हे अबधू निर पख जोगी, सहज नगर का रायों। जो ज्यूँ आवै सो त्यूं थरपां, साचा सूं सत भायों। मोरै मनही मुद्रा तनहीं कंथा, जोग मारग सहडायों। सात सायर म्हे कुरलै कीयों, ना मैं पीया न रह्या तिसायों। डाकण शाकण निंद्रा खुध्या, ये म्हारै तांबै कूप छिपायो। म्हारै मनहीं मुद्रा तनही कंथा, जोग मारग सह लीयो। डाकण शाकण निंद्रा खुध्या,ऐ मोरे मूल न थीयों।

शब्द - (30) (कूंची वाला शब्द)

ओ३म्–आयो हंकारो जीवड़ो बुलायो, कह जीवड़ा के करण कमायो। थरहर कंपै जिव़डो़ डोलै, उत माई पीव न कोई बोलै। सुकरत साथ सगाई चालै, स्वामी ! पवणा पाणी नवण करंतो, चंदे सूरे शीस निवन्तो, विष्णु सुरां पोह पूछ लहन्तो। इहिं खोटे जन मन्तर स्वामी, अहनिश तेरो नाम जपंतो। निगम कमाई मांगी मांग, सुरपति साथ सुरा सू रंग। सुरपति साथ सुरां सूं मेलो, निज पोह खोज ध्याइये। भोम भली कृषाण भी भला, बूठो है जहां बाहिये। करषण करो सनेही खेती, तिसिया साख निपाइये। लुणचुण लीयो मुरा तब कीयो, कण काजै खड़ गाहिंये। कणतुस झेड़ो होय नवेड़ो, गुरूमुख पवण उडाइये। पवणा डोलै तुस उडैलो, कणले अर्थ लगाइये। यूं क्यू भलो जे आप न जरिये, औरां अजर जराइये। यूं क्यूं भलो जे आप न फरिये,

अवरां अफर फराइये। यूं क्यूं भलो जे आप न डरिये, अवरां अडर डराइये। यूं क्यू भलो जे आप न मरिये, अवरां मारण धाइये। पहलै किरिया आप कमाइये, तो औरांनै फरमाइये। जो कुछ कीजै मरणै पहले, मत भल कैह मर जाइये। शौच स्नान करो क्यूं नाहीं, जिवड़ा काजै न्हाइये। शौच स्नान कियो जिन नाहीं, होय भंतूला बहाइये। शील बिबरजित जीव दुहेलो। यमपुरी ये संताइये। रतन काया मुख सूवर बरगो, अबखल झंखे पाइये। सवामण सोनो करणे पाखो, किण पर वाह चलाइये। एक गऊ ग्वाला ऋषि मांगी, करण पखो किण सुरह सुबच्छ दुहाइये। करण पखो किण कंचन दीन्हो, राजा कवन कहाइये। रिण ऋध्ये स्वामी करण पाखो, कुण हीरा डसन पुलाइये। किहिं निश धर्म हुवै धुर पूरो, सुर की सभा समाइये। जे नविये नवणी, खविये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणी, तो सीख

हुयां घर जाइये। अहनिश धर्म हुवै धुर पूरो, सुर की सभा समाइये। किहिं गुण बिदरो पार पहूंतो, करणै फेर बसाइये। मन मुख दान जु दीन्हो करणै, आवागवण जु आइये। गुरमुख दान जु दीन्हो बिदरै, सुर की सभा समाइये। निज पोह पाखो पार असी पुर, जाणी गीत बिवाहे गाइये। भरमी भूला बाद बिबाद, आचार बिचार न जाणत स्वाद। कीरत के रंग राता मुरखा मन हठ मरै, ते पार गिराये कित उतरै।

शब्द - (31)

ओ३म्-भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं का भल बुद्धि पावै। जामण मरण भव काल जु चूकै, तो आवागवण न आवै। भल मूल सींचो रे प्राणी,ज्यूं तरवर मेलत डालूं। हरि परि हरि की आण न मानी,झंख्या झूल्या आलूं। देवा सेवा टेव न जांणी, न बंच्या जम कालू। भूलै प्राणी विष्णु न जंप्यो मूल न खोज्यो, फिर-फिर जोया डालूं।

बिन रैणायर हीरे नीरे, नग न सीपे तके न खोला नालूं। चलन चलंतै, बास बसंतै, जीव जिवंतै, सास फुरंतै काया निवंती,कांय रे प्राणी विष्णु न घाती भालूं। घड़ी घटंतर पहर पटंतर, रात दिनंतर, मास पखंतर, क्षिण ओल्हरबा कालूं। मीठा झूठा मोह बिटंबण, मकर समाया जालूं। कबही को बाइंदो बाजत लोई, घड़िया मस्तक तालूं। जीवां जूणी पड़ै परासा,ज्यूं झींवर मच्छी मच्छा जालूं। पहले जिवड़ो चेत्यो नाहीं, अब ऊंड़ी पड़ी पहारूं। जीवर पिंड बिछोड़ो होयसी, ता दिन थाक रहै सिर मारूं।

शब्द - (32)

ओ३म्–कोड़ गऊ जे तीरथ दानों, पंच लाख तुरंगम दानों। कण कचंन पाट पटंबर दानों, गज गेंवर हस्ती अति बल दानों। करण दधीच सिवर बल राजा, श्री राम ज्यूं बहुत करै आचारूं। जां जां बाद विवादी अति

अहंकारी लबद सवादी, कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबा पारूं।

शब्द - (33)

ओ३म्–कवण न हुवा कवण न होयसी, किण न सहयो दुख भारूं। कवण न गइया कवण न जासी, कवण रहया संसारूं। अनेक अनेक चलंता दीठा, कलि का माणस कौन विचारूं। जो चित होता सो चित नाहीं, भल खोटा संसारूं। किसकी माई किसका भाई, किसका पख परवारूं। भूली दुनिया मर मर जावै, न चीन्हों करतारूं। विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणीं, बल बल बारम्बारूं। कसणी कसबा भूल न बहबा, भाग परापति सारूं। गीता नाद कवीता नाऊं, रंग फटारस टारूं। फोकट प्राणी भरमे भूला, भल जे यों चीन्हो करतारूं, जामण मरण बिगोवो चूकै। रतन काया ले पार पहूंचै, तो आवागवण निवारूं।

शब्द - (34)

ओ३म्–फुंरण फुंहारे कृष्णी माया, घण बरसंता सरवर नीरे। तिरी तिरन्तै तीर, जे तिस मरै तो मरियों। अन्नों धन्नों दूधू दहीयूं, घीऊं मेऊ टेऊं जे लाभंता, भूख मरै तो जीवन ही बिन सरियों। खेत मुक्त ले कृष्णौ अर्थो, जे कंध हरै तो हरियों। विष्णु जपन्ता जीभ जु थाकै, तो जीभड़ियां बिन सरियों। हरि हरि करता हरकत आवै, तो ना पछतावो करियों। भीखी लो भीखियारी लो जे आदि परमतत लाधो। जाकै बाद विराम बिरांसो सांसो, तानै कोण कहसि साल्हिया साधो।

शब्द - (35)

ओ३म्–बल बल भणत व्यासूं। नाना अगम न आसूं। नाना उदक उदासूं। बल बल भई निरासूं। गल मैं पड़ी परासूं। जां जां गुरू न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं, कोई कोई बोलत थूलूं।

शब्द - (36)

ओ३म्–काजी कथै कुराणों, न चीन्हों फरमाणों। काफर थूल भयाणों, जइया गुरू न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं, कोई कोई बोलत थूलूं।

शब्द - (37)

ओ३म्–लोहा लंग लूहारूं, ठाठां घड़ै ठठारूं, उत्तम कर्म कुम्हारूं,जइया गुरू न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं, कोई कोई बोलत थूलूं।

शब्द - (38)

ओ३म्–रेरे पिंड स पिंडू, निरघन जीव क्यूं खंडू। ताछै खंड बिहंडू, घड़ीयै सै घमंडू। अइया पंथ कुपंथू, जइया गुरू न चीन्हों तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।

शब्द - (39)

ओ३म्–उत्तम संग सुसंगू, उत्तम रंग सुरंगू। उत्तम लंग

सुलंगू, उत्तम ढंग सुढंगू। उत्तम जंग सुजंगू, तातैं सहज सुलीलूं। सहज सुपंथू, मरतक मोक्ष दवारूं।

शब्द - (40)

ओ३म्-सप्त पताले तिहूं तृलोके, चवदा भवने गगन गहीरे, बाहर भीतर सर्व निरंतर, जहां चीन्हों तहां सोई। सतगुरू मिलियों सतपंथ बतायो, भ्रांत चुकाई अवर न बुझबा कोई।

शब्द - (41)

ओ३म्-सुण राजेन्द्र सुण जोगेन्द्र, सुण शेषिन्द्र सुण सोफिन्द्र, सुण काफिन्द्र, सुण चाचिन्द्र, सिद्धक साध कहांणी। झूठी काया उपजत विणसत, जां जां नुगरे थिती न जांणी।

शब्द - (42)

ओ३म्-आयसां काहे काजै खेह भकरूड़ो, सेवो भूत मसांणी। घड़ै, ऊंधै बरसत बहु मेहा, तिहिंमा कृष्ण

चरित बिन पड़ यो न पड़सी पाणी। योगी जंगम नाथ दिगम्बर, सन्यासी ब्राह्मण ब्रह्मचारी। मन हट पढिया पंडित, काजी मुल्ला खेलै आप दवारी। निश्चै कायूं वायों होयसैं, जे गुरू बिन खेल पसारी।

शब्द - (43)

ओ३म्–ज्यूं राज गए राजिन्दर झूरै, खोज गए नै खोजी। लाछ मुई गिरहायत झूरै, अरथ बिहूंणा लोगी। मोर झड़े, कृसाण भी झूरे, बिंद गए नै जोगी। जोगी, जंगम, जपिया, तपिया, जती तपी तक पीरूं। जिहिं तुल भूला पाहण तोलै, तिहिं तुल तोलन हीरूं। जोगी सो तो जुग जुग जोगी, अब भी जोगी सोई। थे कान चिरावो चिरघट पहरो, आयंसा यह पाखंड तो जोग न होई। जटा बधारो जीव सिंघारो, आयसां इहि पाखडं तो जोग न होई।

शब्द - (44)

ओ३म्–खरतर झोली खरतर कंथा,कांध सहै दुख भारूं। जोग तणी थे खबर न पाई,कायं तज्या घर बारूं। ले सुई धागा सीवण लागा, करड़ कसीदि मेखलीयों। जड़ जटा धारी लंघै न पारी, बाद बिबादि बेकरणो। थे बीर जपो बेताल धियावो, कांय न खोजो ततकणो। आयसां डंडत डंडू मुंडत मुंडू, मुंडत माया मोह किसो। भरमी बादी बादे भूला कांय न पाली जीव दयों।

शब्द - (45)

ओ३म्–दोय मन दोय दिल सिंवी न कंथा, दोय मन दोय दिल पुली न पंथा। दोय मन दोय दिल कही न कथा, दोय मन दोय दिल सुणीं न कथा। दोय मन दोय दिल पंथ दुहेला, दोय मन दोय दिल गुरू न चेला। दोय मन दोय दिल बंधी न बेला, दोय मन दोय दिल रब्ब दुहेला। दोय मन दोय दिल सूई न धागा, दोय मन दोय

दिल भिड़े न भागा। दोय मन दोय दिल भेव न भेऊ, दोय मन दोय दिल टेव न टेऊं। दोय मन दोय दिल केल न केला, दोय मन दोय दिल सुरग न मेला। रावल जोगी तां फिरियों, अण चीन्हैं के चाहयों। कांहे काजै दिशावर खेलो, मन हठ सीख न कायों। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या, गुरू न चीन्हो रायो। कण विण कूकस कायं पीसो, निश्चय सरी न कायों। बिन पायचिये पग दुख पावै, अबधू लोहै दुखी स कायों। पारब्रह्म की सुध न जांणी, तो नागे जोग न पायों।

शब्द - (46)

ओ३म्–जिहिं जोगी के मनही मुद्रा, तनही कंथा पिंडै अगन थंभायों। जिहिं जोगी की सेवा कीजै, तूठो भवजल पार लंघावै। नाथ कहावै मर मर जावै, से क्यूं नाथ कहावै। नान्ही मोटी जीवा जूंणी, निरजत सिरजत फिर फिर पूठा आवै। हमही रावल हमही जोगी, हम

राजा के रायों। जो ज्यूं आवे सो त्यूं थरपां, साचां सूं सत भायो। पाप न छिपां पुण्य न हारां, करां न करतब लावां बारूं। जीव तड़ै को रिजक न मेटू, मूवा परहथ सारूं। दोरै भिस्त विचालै ऊभा, मिलिया काम सवारूं।

शब्द - (47)

ओ३म्–काया कंथा मन जो गूंटो, सींगी सास उसासूं। मन मृग राखलै कर कृषांणी, यूं म्हे भया उदासूं। हमही जोगी हमही जती, हमही सती हमही राख बा चीतूं। पंच पटण नव थानक साध ले, आद नाथ के भक्तूं।

शब्द - (48)

ओ३म्–लक्ष्मण लक्ष्मण न कर आयसां, म्हारे साधां पड़ै बिराऊं। लक्ष्मण सो जिन लंका लीवी रावण मारयो,एसो किया संग्रामू। लक्ष्मण तीन भुवन को राजा, तेरे एक न गाऊं। लक्ष्मण कै तो लख चौरासी जीया जूणी, तेरे एक न जीऊं। लक्ष्मण तो गुणवंतो

जोगी, तेरै बाद विराऊं। लक्ष्मण का तो लक्षण नाहीं, शीस किसी बिध नाऊं।

शब्द - (49)

ओ३म्–अबधू अजरा जार ले, अमरा राख ले। राख ले विन्द की धारण, पाताल का पाणी आकाश कूं चढ़ायले। भेटले गुरू का दरशणा।

शब्द - (50)

ओ३म्–तइया सांसू तइया मासूं, तइया देह दमोई। उत्तम मध्यम क्यूं जाणीजै?, बिबरस देखो लोई। जाके बाद बिराम बिरासों सांसो सरसां भोलो चालै, ताकै भीतर छोत लकोई। जाकै बाद बिराम बिरांसो सांसो सरसा भोलो भागो, ताके मूले छोत न होई। दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो, सब दिल जाग्यो सोई। जो जिन्दो हज काबै जाग्यो, थल सिर जाग्यो सोई। नाम विष्णु कै मुसकल घातै, ते काफर सैतानी।हिंदू होय कर

तीरथ न्हावै, पिंड भरावै, तेपण रहया इवांणी। जोगी होय कर मूंड मूंड़ावै कान चिरावै, गोरख हटड़ी धोकै, तेपण रहया इवांणी। तुरकी होय हज काबो धोके, भूला मुसलमाणी। के के पुरूष अवर जागैला, थल जाग्यो निज बाणी। जिहिं कै नादे वेदे शीले शब्दे, लक्षणे अंत न पारूं। अंजन मांहि निरंजन आछै, सो गुरू लक्ष्मण कंवारूं।

शब्द - (51)

ओ३म्-सप्त पताले भुयं अंतर अंतर राखिलो, म्हे अटला अटलूं। अलाह अलेख अडाल अजूनी शिंभू, पवन अधारी पिंडजलूं। काया भीतर माया आछै, माया भीतर दया आछै। दया भीतर छाया जिहिंकै, छाया भीतर बिंब फलूं। पूरक पूर पूर ले पौण, भूख नहीं अन्न जीमत कौंण।

शब्द - (52)

ओ३म्–मोह मण्डप थाप थाप ले, राख राखले, अधरा धरूं आदेस बेसूं। ते नरेसूं, ते नरां अपरं पारूं। रण मध्ये से नर रहियों, ते नरा अडरा डरूं। ज्ञान खड़गूं,जथा हाथे, कोण होयसी हमारा रिपूं।

शब्द - (53)

ओ३म्–गुरू हीरा बिणजै लेहम लेहूं, गुरू नै दोष न देणा। पवणा पाणीं जमी मेहूं, भार अठारैं परवत रेहूं। सूरज जोती परै पररै, एती गुरू कै शरणै। केती पवली अरू जल बिम्बा, नवसै नदी निवासी नाला,सायर एती जरणा। कोड़ निनाणवै राजा भोगी, गुरू कै आखर कारण जोगी। माया राणी राज तजीलो, गुरू भेटीलो जोग सझीलो। पिंडा देख न झुरणा, कर कृसाणीं बेफायत संठो। जो जो जीव पिंडै नीसरणा, आदू पहली घड़ी अढाई। स्वर्गे पहुंता हिरणी हिरणा, सुंरा पुनां

तेतीसां मेलो। जे जीवन्ता मरणों। के के जीव कुजीव कुधात कलोतर बांणी, बादींलो हंकारी लो। वैभार घणा ले मरणो, मिनखा रै तैं सूतै सोयो खूलै खोयो। जड़ पाहन संसार बिगोयो। निरफल खोड़ भिरांति भूला, आंस किसी जा मरणो। बेसाही अंध पडयो गल फंध, लियो गल बंध गुरू बरजंतै। हैले श्याम सुन्दर कै टोटै, पारस दुस्तर तरणो। निश्चै छेह पड़ेलो पालो, गोवल बास जू करणो। गोवल वास कमाय ले जिबड़ा, सो सुरगां पुर लहणा।

शब्द - (54)

ओ३म्–अरण विवांणै रै रिव भांणै देव दिवाणै, विष्णु पुराणे। बिंबा बाणो सूर उगाणे, विष्णु बिबाणे कृष्ण पुरांणे। कांय झंख्यो तै आल पिराणी, सुर नर तणीं सबेरूं। इंडो फूटो बेला बरती, ताछै हुई बेर अबेरूं। मेरे परै सो जोयण बिंबा लोयण, पुरूष भलो निज बांणी।

बांकी म्हारी एका जोती, मनसा सास विवाणी। को अचारी अचारे लेणा, संजमे शीले सहज पतीना। तिहिं अचारी नै चीन्हत कौण, जांकी सहजे चूकै आवागवण।

शब्द - (55)

ओ३म्–रण घटिये कै खोज फिरन्ता, सुण सेवन्ता, खोज हस्ती को पायो। लूंकड़िये को खोज फिरंता, सुण सेवन्ता, खोज सुरह को पायो। मोथड़िये कै गूंढ खणंता, सुण सेवन्ता, लाधो थान सुथानो। रांघड़िये को घाट घड़न्ता, सुण सेवन्ता, कंचन सोनो डायों। हस्ती चड़न्ता गेंवर गुड़न्ता, सुणही सुणहां भूंकत कायो।

शब्द - (56)

ओ३म्–कुपात्र कू दान जु दीयो, जाणै रैंण अंधेरी चोर जु लीयो। चोर जू लेकर भाखर चढियो, कह जिवड़ा तैं कैनैं दीयों। दान सुपाते बीज सुखेते, अमृत फूल

फलीजै। काया कसौटी मन जो गूंटो, जरणा ढाकण दीजै। थोड़ै माहिं थोड़ेरो दीजै, होते नाह न कीजै। जोय जोय नाम विष्णु के बीजै, अनन्त गुणा लिख लीजै।

शब्द - (57)

ओ३म्- अति बल दानो सब स्नानो, गऊ कोट जे तीरथ दानो, बहुत करै अचारूं। ते पण जोय जोय पार न पायो, भाग परापति सारूं। घट ऊंधै बरषत बहु मेहा, नीर थयों पण ठालूं। को होयसी राजा दुर्योधन सो, विष्णु सभा मह लाणो। तिणहीं तो जोय जोय पार न पायो, अध विच रहीयों ठालूँ। जपिया तपिया पोह बिन खपिया, खप खप गया इवांणीं। तेऊ पार पहूंता नाही, तांकी धोती रही अस्मानी।

शब्द-(58)

ओ३म्-तउवा माण दुर्योधन माण्या, अवर भी माणत मांणू।तउवा दान जू कृष्णी माया और भी फूलत दानो।

तउवा जाण जू सहस्त्र झूझ्या और भी झूझत जाणो।तउवा बाणजूं सीता कारण लक्ष्मण खैच्या,और भी खैंचत बाणौ। जती तपी तक पीर ऋषीश्वर, तोल रहया शैतानो। तिण किण खैंच न सके, शिंभु तणी कमाणू।तेऊ पार पहूंता नाहीं, ते कीयो आपो भांणो।तेऊ पार पहूंता नाहीं, ताकी धोती रही अस्माणो। बांरा काजै हरकत आई, अध बिच मांड्यो थांणो। नारसिंह नर नरा ज नरवो,सुराज सुरवो,नरां नरपति, सुरा सुरपति, ज्ञान न रिंदो, बहुगुण चिन्दो। पहलू प्रहलादा आप पतलीयो, दूजा काजैं काम बिटलीयो।खेत मुक्त ले पंच करोड़ी, सो प्रहलादा गुरू की बाचा बहियों। ताका शिखर अपारूं, ताको तो बैकुंठे वासो। रतन काया दे सोंप्या, छलत भण्डारूं। तेउ तो उरवारे थाणो, अई अमाणो, तत समाणो, बहु प्रमाणो। पार पहूंचण हारा, लंका के नर शूर संग्रामे घणा

बिरामें। काले काने भला तिकंट, पहलै जूझ्या बाबर झंट। पड़ै ताल समंदा पारी, तेऊ रहीया लंकदवारी। खेत मुक्तले सात करोड़ी, परशुराम के हुकम जे मूवा, से तो कृष्ण पियारा। ताको तो बैकूंठे बासो, रतन काया दे सोंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तो उरवारे थाणो, अई अमाणो, पार पहूंचन हारा। काफर खानो बुद्धि भराड़ो, खेत मुक्त ले नव करोड़ी राव युधिष्ठिर, सेतों कृष्ण पियारा। ताकों तों बैकुण्ठे वासों, रतन काया दे सोंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तों उरवारे थाणों, अई अमाणो बहु परमाणों, पार पहूंचन हारा। बारा काजै हरकत आई, तातै बहुत भई कसवारूं।

शब्द - (59)

ओ३म्–पढ़ कागल वेदूं शास्त्र शब्दूं, भूला भूले झंख्या आलूं। अहनिश आव घटंती जावै, तेरा सास सबी कसवारूं। कइया चन्दा कइया सूरूं, कइया काल

बजावत तूरूं। उर्द्धक चन्दा निरधक सूरूं, सुन घट काल बजावत तूरूं। ताछै बहुत भई कसवारूं। रक्तस बिन्दु परहस निन्दू, आप सहै तेपण बूझे नहीं गवारूं।

शब्द - (60)

ओ३म्–एक दुख लक्ष्मण बंधू हइयों, एक दुख बूढै घर तरणी अइयों। एक दुख बालक की मां मुइयों, एक दुख औछै को जम वारूं। एक दुख तूटै सैं व्यवहारूं, तेरे लक्षणे अन्त न पारूं। सहै न शक्ति भारू, कै तैं परशुराम का धनुष जे पइयो। कै तैं दाव कुदाव न जाण्यो भइयूं, लक्ष्मण बाण जे दहशिर हइयों। एतो झूझ हमें नहीं जाण्यो, जे कोई जाणै हमारा नाऊं। तो लक्ष्मण ले बैकुण्ठे जाऊं, तो बिन ऊभा पह प्रधानो। तो बिन सूना त्रिभुवन थानो, कहा हुओ जे लंका लइयो। कहा हुओ जे रावण हइयों, कहा हुओ जे सीता अइयों। कहा करूं गुणावन्ता भइयों, खल कै साटे हीरा गइयो।

शब्द - (61)

ओ३म्–कैतैं कारण किरिया चूक्यो, कैतैं सूरज सामो थूक्यो। कैतैं उभै कांसा मांज्या, कैतैं छान तिणूका खैच्या। कैतैं ब्राह्मण निवत बहोड्या, कैतैं आवा कोरंभ चोर्या। कैतैं बाड़ी का बन फल तोड़या, कैतैं जोगी का खप्पर फोड़्या। कैतैं ब्राह्मण का तागा तोड़्या, कैतैं बैर बिरोध धन लोड़या। कैतैं सूवा गाय का बच्छा बिछोड़्या, कैतैं चरती पिवती गऊ बिडारी। कैतैं हरी पराई नारी, कैतैं सगा सहोदर मारया। कैतैं तिरिया शिर खड़ग उभारया, कैतैं फिरतैं दातण कीयो। कैतैं रण मैं जाय दों दीयो, कैतैं वाट कूट धन लीयो। किसे सरापे लक्ष्मण हुइयों।

शब्द - (62)

ओ३म्–नामै कारण किरिया चूक्यो, नामै सूरज साम्हो थूक्यो। नामै ऊभै कांसा मांज्या, नामै छान तिणूका

खैंच्या। नामैं ब्राह्मण निवत बहोड्या, नामैं आवा कोरम्भ चोरया। नामैं बाड़ी का बनफल तोड्या, नामैं जोगी का खप्पर फोड्या। नामैं ब्राह्मण का तागा तोड्या, नामैं बैर बिरोध धन लोड्या। नामैं सूवा गाय का बच्छ बिछोड्या, नामैं चरती पिवती गऊ बिडारी। नामैं हरी पराई नारी, नामैं सगा सहोदर मारया। नामैं तिरिया सिर खड़ग उभारया, नामैं फिरतै दातण कीयो, नामैं रण में जाय दौं दियो,नामैं बाट कूट धन लीयो। एक जू ओंगुण रामैं कीयों, अण हुंतो मिरघो मारण गइयो। दूजो औगुण रामै कीयो, एको दोष अदोषा दीयों। बनखंड मैं जद साथर सोइयों, जद को दोष तदो को होइयों।

शब्द - (63)

ओ३म्–आतर पातर राही रूक्मण मेल्हा मंदिर भोयो, गढ़ सोवन तेपण मेल्हा रहा छड़ा सी जोयों। रात पड़ंता

पाला भी जाग्या, दिवस तपंता सूरू। ऊन्हा ठाढा पवना भी जाग्या, घन बरसंता नीरूं। दुनीतणा औचाट भी जाग्या, के के नुगरा देता गाल गहीरूं। जिहिं तन ऊना ओढण ओंढां, तिहिं ओढंता चीरूं। जां हाथे जप माली जपां, तहां जपंता हीरूं। बारा काजै पड्यो बिछोहो, संभल संभल झूरूं। राघो सीता हनुवंत पाखों, कौन बंधावत धीरूं। मागर मणिया कांच कथीरूं, हीरस हीरा हीरूं। विखा पटंतर पड़ता आया, पूरस पूरा पूरूं। जे रिण राहे सूर गहीजै, तो सूरज सूरा सूरूं। दुखिया है जे सुखिया होयसैं, करसै राज गहीरूं। माह अंगीठी बिरखा ओल्हो, जेठ न ठंडा नीरूं। पलंग न पोढण, सेज न सोवण कंठ रूलंता हीरूं। इतना मोह न मानै शिंभु, तहीं तहीं सुसीरू। घोड़ा चौली बाल गुदाई, श्री राम का भाई। गुरू की बाचा बहियों, राघों सीता हनुवंत पाखो। दुख सुख कांसू कहियों।

शब्द - (64)

ओ३म्–मैं कर भूला मांड पिराणी, काचै कन्ध अगाजूं। काचा कंध गले गल जायसैं, बीखर जैला राजों। गड़ बड़ गाजा कांय बिबाजा, कण बिण कूकस कांय लेणा। कांय बोलो मुख ताजों, भरमी बादी अति अहंकारी। लावत यारी, पशुवां पड़ै भिरान्ति। जीव बिणासै लाहै कारणै, लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजो। जो अति काले ले जम काले तेपण खीणा, जिहिं का लंका गढ़ था राजों। बिन हस्ति पाखर बिन गज गुड़ियों,बिन ढोंला डूमां लाकड़ियो। जाकै परसण बाजा बाजै,सो अपरंपर कांय न जंपो, हिन्दू मुसलमानों। डर डर जीव कै काजै, रावा रंका राजा रांवां,रावत राजा,खाना खोजां, मीरां मुलका,घंघ फकीरां,घंघा गुरवां,सुरनर देवां,तिमर जू लंगा, आयसां जोयसा,साह पुरोहितां,मिश्रही ब्यासा रूंखां बिरखां,आव घंटती।

अतरा माहे कूंण विशेषो,मरणत एको माघों। पशु मुकेरू लहैन फेरूं,कहे ज मेरूं सब जग केरूं, साचै सै हर करै घणेरूं। रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला, तातैं मेरूं न तेरूं।विसर गया ते माघूं, रक्तूं नातूं सेतूं धातूं कुमलावै ज्यूं शागू। जीवर पिंड बिछोवा होयसी,ता दिन दाम दुगाणी। आडन पैंको रती बिसोवो सीझै नाही, ओपिंड काम न काजूं।आवत काया ले आयो थो,जातैं सूको जागो। आवत खिण एक लाई थी पर जातैं खिणी न लागो। भाग परापति कर्मा रेखां, दरगै जबला जबला माघौं। बिरखे पान झड़े झड़ जायला, तेपण तेई न लांगू। सेतू दगधूं कवलज कलीयों, कुमलावै ज्यूं शागूं। ऋतुबशंती आई और भलेरा शागूं। भूला तेण गयारे प्राणी, तिहि का खोज न माघूं। विष्णु विष्णु भण लेई न साई, सुर नर ब्रह्मा को न गाई। तातैं जंवर बिन डसीरे भाई, बास बसंतै किवी न कमाई। जंवर तणा जमदूत

दहैला, तातैं तेरी कहा न बसाई।

शब्द - (65)

ओ३म्–तउवा जाग जु गोरख जाग्या, निरह निरंजन निरह निरालंब। जुग छतीसों एकै आसन बैठा बरत्या,अवर भी अबधू जागत जांगू। तउवा त्याग जू ब्रह्मा त्यागा, अवर भी त्यागत त्यागूं। तउवा भाग जो इश्वर मस्तक, अवर भी मस्तक भागूं। तउवा सीर जो ईश्वर गौरी, अवर भी कहियत सीरूं। तउवा बीर जो राम लक्ष्मण, अवर भी कहियत बीरों। तउवा पाग जो दश शिर बांधी, अवर भी बांधत पागो। तउवा लाज जो सीता लाजी, अवर भी लाजत लाजूं। तउवा बाजा राम बजाया, अवर बजावत बाजूं। तउवा पाज जो सीता कारण लक्ष्मण बांधी, अवर भी बांधत पाजूं। तउवा काज जो हनुमत सारा, अवर भी सारत काजूं। तउवा खागज जो कुम्भकरण महरावण खाज्या, अवर भी

खावत खागूं। तउवा राज दुर्योधन माण्या, अवर भी माणत राजूं। तउवा राग ज कन्हड़ बांणी, अवर भी कहिये रागूं। तउवा माघ तुरंगम तेजी, टटू तणा भी माघूं। तउवा बागज हंसा टोली, बुगला टोली भी बागूं। तउवा नाग उद्यावल कहिये, गरूड़ सीया भी नागूं। तउवा शागज नागरबेली, कूकर बगरा भी शांगू। जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महंतज फलियों। जुरा जम राक्षस जुरा जुरिन्द्र,कंश केशी चंडरूं। मधु कीचक हिरणाक्ष हिरणाकुस, चक्र धर बलदेऊं। पावत वासुदेवो मंडलीक कांय न जोयबा, इहिं धर ऊपर रती न रहीबा रांजू।

शब्द - (66)

ओ३म्–ऊमाज गुमाज पंज गंज यारी,रहिया कुपहीया शैतान की यारी। शैतान लो भल शैतान लो,शैतान बहो जुग छायो। शैतान की कुबध्यान खेती, ज्यूं काल मध्ये

कुचीलू। बे राही बे किरियावन्त। कुमति दौरै जायसैं, शैतानी लोड़त रलियों। जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महंत न फलियों। नील मध्ये कुचील करबा, साध संगिणी थूंलूं। पोहप मध्ये परमला जोती, यूं सुरग मध्ये लीलूं। संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं घण बरसंता नीरूं। संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं रूही मध्ये खीरूं।

शब्द - (67) (शुक्ल हंस)

ओ३म्-श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुंय नागोरी, म्हे ऊंडे नीरे अवतार लीयो। अठगी ठंगण अदगी दागण, अगजा गंजण, ऊंनथ नाथन, अनू नवावन, काहि को म्हे खैंकाल कीयों। काहीं सुरग मुरादे देसां, काहीं दौरै दीयूं। होम करीलो दिन ठावीलो, सैंस रचीलो छापर नीबी दूण पूरूं, गांव सुंदरीयो छीलै बलदीयो। छंदे मन्दे बाल दीयो। अजम्है होता नागो बाड़े, रैण थंभै गढ़ गागरणो। कुं कुं कंचन सोरठ मरहठ, तिलंग दीप गढ

गागरणो। गढ़ दिल्ली कंचन अर दूणायर, फिर फिर दुनिया परखै लीयों। थटै भवणिया अरू गुजरात। आछो जाई सवा लाख मालवै परवत मांडू मांही ज्ञान कथूं। खुरासाण गढ लंका भीतर। गूगल खेऊं पैरठयों। ईडर कोट उजैणी नगरी, काहिंदा सिंध पुरी विश्राम लीयों। कायं रे सायरा गाजै बाजै, घुरै घुरहरै करै इवांणी आप बलूं। किहिं गुण सायरा मीठा होता, किहिं अवगुण हुओ खार खंरूं। जद बासग नेतो मेर मथाणी, समंद बिरोल्यो ढोयऊरू। रैणायर डोहण पांणी पोहण, असुरां बेधी करण छलूं। दहशिर नै जद वाचा दीन्हीं, तद म्हे मेल्ही अनंत छलूं। दहशिर का दश मस्तक छेद्या, ताणु बाणु लडू कुलूं। सोखा बाणु एक बखाणू, जाका बहु परवाणूं। निश्चय राखी तास बलूं, राय विष्णु से बाद न कीजैं। कांय बधारो दैत्य कुलूं। म्हेपण म्हेई, थेपण थेई, सा पुरूषा की लच्छ कुलूं। गाजै गुड़कै से

क्यूं वीहै, जेझल जाकी सैहस फणूं। मेरे माय न बाप न बहण न भाई, साख न सैंण न लोक जणो। बैकुण्ठे विश्वास बिलम्बण, पार गिराये मात खिणू। विष्णुं विष्णुं तू भण रे प्राणी, विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं। सहसे नावें, सहंसे ठावें, सहसे गावै, गाजे बाजे, हीरे नीरे, गगन गहीरे, चवदा भवणे, तिहूं तृलोके जम्बू दीपे, सप्त पताले, अई अमाणो तत समाणो। गुरू फुरमाणो, बहू परवाणो। अइयां, उइयां निरजत सिरजत, नान्ही मोटी जीया जूंणी एती सास फुरतै सारूं। कृष्णी माया घन बरंषता, म्हे अगिणि गिणूं फूहांरूं। कुण जाणै म्हे देव कुदेवों, कुण जाणै म्हे अलख अभेवों। कुण जाणै म्हे सुर नर देवों, कुण जाणै म्हारा पहला भेवूं। कुण जाणै म्हे ज्ञानी के ध्यानी, कुण जाणै म्हे केवल ज्ञानी। कुण जाणै म्हे ब्रह्मज्ञानी। कुण जाणै म्हे ब्रह्मचारी। कुण जाणै म्हे अल्प अहारी, कुण जाणै म्हे पुरूष कै नारी।

कुण जाणै म्हे बाद बिबादी, कुण जाणै म्हे लुब्ध सवादी। कुण जाणै म्हे जोगी के भोगी, कुण जाणै म्हे आप संयोगी। कुण जाणै म्हे भावत भोगी। कुण जाणै म्है लील पती, कुण जाणै म्है सूम क दाता, कुण जाणै म्है सती कुसती, आप ही सूमर आप ही दाता, आप कुसती आपें सती। नव दाणूँ निरवंश गुमाया, कैरव किया फिती फिती। राम रूप कर राक्षस हड़िया, बाण कै आगै वनचर जुड़िया। तद म्हें राखी कमल पती, दया रूप म्हे आप बखांणा संहार रूप म्हे आप हती। सोलै संहस नवरंग गोपी, भोलम भालम, टोलम टालम, छोलम छालम, सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती। छोलबीया म्हे तपी तपेश्वर, छोलब कीया फती फती। राखण मतां तो पड़दै राखां, ज्यूं दाहै पान वणासपती।

शब्द - (68)

ओ३म्–वै कंवराई अनन्त बधाई, वै कंवराई सुरग बधाई, यह कंवराई खेह रलाई, दुनीयां रोलै कंवर किसो, कण बिण कूकस रस बिन बाकस बिन किरिया परिवार किसो। अरथूँ गरथूं साहण थाटूं, धूंवै का लहलोर जिसो। सो शारंगधर जपरे प्राणी, जिहिं जपिये हुवै धरम इसो। चलण चलंतै, बास बसंतै, जीव जिवंतै, काया निंवतै, सास फुरंतै किवी न कमाई। तातै जंवर बिन ड़सी रे भाई। सुर नर ब्रह्मा कोउ न गाई, माय न बाप न बहण न भाई। इंत न मिंत न लोक जणो, जंवर तणा जमदूत दहेला। लेखो लेसी एक जणो।

शब्द - (69)

ओ३म्–जबरारे तैं जग डांडीलो, देह न जीती जांणो। माया जाले ले जम काले, लेणा कोण समाणो। काचै पिंडै किसी बड़ाई, भोलै भूल अयांणो। म्हां देखंता देव

दाणु, सुर नर खीणा, बीच गया बेराणो। कुभंकरण महरावण होता, अबली जोध अयाणो। कोट लंका गढ बिषमा होता, कांयदा बस गया रावण राणो। नौ ग्रह रावण पाए बन्ध्या, तिस बीह सुर नर शंक भयाणो। ले जम कालें अति बुधवंतो, सीता काज लुंभाणो। भरमी बादी अति अंहकारी, करता गरब गुमानो। तेऊ तो जम काले खीणा, थिर न लाधौ थाणो। काचै पिंड अकाज अफारूं, किसो पिराणी माणो। साबण लाख मजीठ बिगूता, थोथा बाजर घाणो। दुनियां राचै गाजै बाजै, तामें कणू न दाणू। दूनियां के रंग सब कोई राचै, दीन रचै सो जाणो। लोही मांस बिकारो होयसी, मुर्ख फिरै अयाणो। मागर मणियां काच कथीरन राचो, कूड़ा दुनी डफाणो। चलन चलन्तै, जीव जीवन्तै, काया निवन्ती सास फुरंतै। कांयरे प्राणी विष्णु न जंप्यो, कीयो कन्धै को तांणो। तिहिं ऊपर आवैला जंवर तणा दल, तास

किसो सहनाणौ। ताकै शीष न ओढण पाय न पहरण, नैवा झूल झयाणो। धणक न बाण न टोप न अंगा, टाटर चुगल चयाणो। साल सुचंगी घृत सुबासो, पीवण न ठंडा पांणी। सेज न सोवण पंलग न पोढण, छात न मैड़ी माणो। न वा ंदइया न वां मइयां, नागड़ दूत भयाणो। काचा तोड़ नीकूचा भाखे, अघट घटैं मल माणो। धरती अरू असमान अगोचर, जा तैं जीव न देही जाणो। आवत जावत दीसै नाहीं, साचर जाय अयाणो। जंवर तंणा जमदूत दहैला, मल बेसैला मांणों। तातै कलीयर कागा रोलो, सूना रहयो अयाणो। आयसां जोयसां भणता गुणतां, वार महूर्ता पोथा थोथा। पुस्तक पढिया वेद पुराणों, भूत परेती कांय जपीजै यह पाखण्ड परमाणों। कान्ह दिशावर जेकर चालो, रतन काया ले पार पहूंचो, रहसी आवा जाणो। तांह परेरै पार गिरायें ततकै निश्चल थाणो। सो अपरंपर कांय न जंपो,

ततखिण लहो इमाणो। भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं तरवर मेलत डालूं। जइया मूल न सीच्यो, तो जामण मरण बिगोवो। अहनिश करणी थिर न रहिबा, न बंच्यो जम कालूं। कोई कोई भल मूल सींचीलो, भल तंत बूझीलो। जा जीवन की विध जाणी, जीव तड़ा कछु लाहो होसी मूवा न आवत हांणी।

शब्द - (70)

ओ३म्–हक हलालूं,हक साच कृष्णों, सुकृत अहल्यो न जाई। भल बाहीलो भल बीजीलो,पवणा बाड़ बलाई। जींव कै काजै खड़ो ज खेती, तामें ले रखवालो रे भाई। दैतानी शैतानी फिरैला, तेरी मत मोरा चर जाई।उन मुन मनवा जीव जतन कर, मन राखी लो ठांई। जीव कै काजै खड़ो ज खेती, वाय दवाय न जाई। न तहां हिरणी न तहां हिरणा न चीन्हों हरि आई, न तहां मोरा न तहां मोरी न ऊंदर चर जाई।कोई गुरू कर ज्ञानी

तोड़त मोहा तेरो मन रखवालो रे भाई, जो आराध्यो राव युधिष्ठर सो आराध्यो रे भाई।

शब्द - (71)

ओ३म्–धवणा धूजै पाहण पूजै बे फरमाई खुदाई, गुरू के चेले के पाए लागै देखो लोग अन्यायी। काठी कणजो रूपा रेहण, कापड़ मांह छिपाई। नीचा पड़ पड़ तानैं धोकें, धीरा रे हरि आई। ब्राह्मण नाऊं लादण रूड़ा, बूता नाऊं कूता। वै अपहानै पोह बतावैं, बैर जगावैं सूता। भूत परेती जाखा खांणी, यह पाखण्ड परवाणो। बल बल कूकस कांय दलीजै, जामे कणूं न दाणू। तेल लीयो खल चोपै जोगी, खलपण सूंघी बिकाणो। कालर बीज न बीज पिराणी, थल सिर न कर निवाणो। नीर गए छीलर कांय सोधो, रीता रह्या इवाणो। भवंता ते फिरंता, फिरंता ते भवंता, मड़े मसाणे। तड़े तड़ंगे, पड़े पखांणे, वहां तो सिद्धि न काई। निज पोह खोज

पिराणी, जे नर दावो छोड्यो मेर चुकाई, राह तेतीसों की जाणी।

शब्द - (72)

ओ३म्–वेद कुराण कुमाया जालूं, भूला जीव कुजीव कुजाणी। बसंदर नहीं नख हीरूं, धर्म पुरूष सिरजीवै पूरूं। कलि का माया जाल फिटाकर प्राणी, गुरू की कलम कुरांण पिछांणी। दींन गुमान करैलो ठाली, ज्यूं कण घातै घुण हांणी। साच सिदक शैतान चुकावो, ज्यूं तिस चुकावै पांणी। मैं नर पूरा सरविणजो हीरा, लेसी जांकै हृदय लोयण अंधा रहा इवांणी। निरख लहो नर निरहारी, जिन चोखंड भीतर खेल पसारी। जंपो रे जिण जंपे लाभैं, रतन काया ए कहांणी। काही मारूं काहीं तारूं, किरिया बिहूंणा पर हथ सारूं। शील दहूं उबारूं ऊंन्है, एकल एह कहांणी। केवल ज्ञानी थल शिर आयो, परगट खेल पसारी। कोड़ तेतीसों पोह रचावण

हारी, ज्यूं छक आई सारी।

शब्द - (73)

ओ३म्–हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी जहां हमारा बासा। चार चक नव दीप थरहरै, जो आपो परकासूं। गुणिंया म्हारा सुगणा चेला, म्हे सुगणा का दासूं। सुगणा होय सैं सुरगे जायसैं, नुगरा रहा निरासूं। जा का थान सुहाया घर बैकुण्ठे, जाय संदेसो लायो। अमिया ठमियां इमृत भोजन, मनसा पलंग सेज निहाल बिछायों। जागो जोवो जोत न खोवो, छल जासी संसारूं। भणी न भणबा सुणी न सुणबा, कही न कहबा, खडी न खड़बा, रे भल कृषाणी। ताकै करण न घातो हेलो, कलीकाल जुग बरते जैंलो, तातै नही सुरां सो मेलों।

शब्द - (74)

ओ३म्–कड़वा मीठा भोजन भख ले, भखकर देखत खीरूं। धर आखरड़ी साथर सोवण, ओढण ऊना

चीरूं। सहजे सोवण पोह का जागण, जे मन रहिबा थीरूं। सुरग पहेली सांभल जिवड़ा, पोह उतरबा तीरूं।

शब्द - (75)

ओ३म्–जोगी रे तू जुगत पिछांणी, काजी रे तू कलम कुरांणी। गऊ बिणासो कांहे तानी, राम रजा क्यूं दीन्ही दानी। कान्ह चराई रनबे वांनी, निरगुन रूप हमें पतियानी। थल शिर रह्या अगोचर बानी, ध्याय रे मुंडिया पर दानी। फीटा रे अण होता तानी, अलख लेखो लेसी जानी।

शब्द - (76)

ओ३म्–तन मन धोइये संजम हुइये, हरष न खोइये। ज्यूं ज्यूं दुनिया करै खुवारी, त्यूं त्यूं किरिया पूरी। मुग्धां सेती यूं टल चालो, ज्यूं खड़कै पास धनुरी।

शब्द - (77)

ओ३म्–भूला लो भल भूला लो, भूला भूल न भूलूं।

जिहिं ठूंठडीये पान न होता, ते क्यूं चाहत फूलूं। को को कपूर घूंटीलो, बिन घूंटी नहीं जाणी। सतगुरू होयबा सहजे चीन्हबा, जाचंध आल बखांणी। ओछी किरिया आवै फिरियां, भ्रांती सुरग न जाई। अन्त निरंजन लेखो लेसी, पर चीन्हों नहीं लोकाई। कण बिन कूकस रस बिन बाकस, बिन किरिया परिवारूं। हरि बिंन देहरै जांण न पावै, अम्बाराय दवारूं।

शब्द - (78)

ओ३म्–नवै पोल नवै दरवाजा, अहूठ कोड़ रूं राय जड़ी। कांयरे सींचो बनमाली, इंहि बाड़ी तो भेल पड़सी। सुबचन बोल सदा सुहलाली, नाम विष्णु को हरे सुणो। घण तण गड़बड़ कायों वायों, निज मारग तो बिरला कायों। निज पोह पाखो पार असी पर, जाण म गाहि मै गायो गूंणो। श्रीराम में मति थोड़ी, जोय जोय कण विण कूकस कायों लेणो।

शब्द - (79)

ओ३म्–बारा पोल नवै दरसाजी, राय अथरगढ थीरूं।
इस गढ कोई थिर न रहिबा, निश्चै चाल गया गुरू पीरूं।

शब्द - (80)

ओ३म्–जे म्हां सूता रैण बिहावै, तो बरतै बिम्बा बारूं। चन्द भी लाजै सूर भी लाजै, लाजै धर गैणारूं। पवणा पाणी येपण लाजै, लाजै बणी अठारा भारूं। सप्त पताल फुणीदा लाजै, लाजै सागर खारूं। जंबूदीप का लोइया लाजै, लाजै धवली धारूं। सिध अरू साधक मुनिजन लाजै, लाजै सिरजण हारूं। सत्तर लाख असी पर जंपा, भले न आवै तारूं।

शब्द - (81)

ओ३म्–भल पांखडी पाखंड मंडा, पहला पाप परा छत खंडा। जा पाखंडी कै नादे वेदे शीले शब्दे बाजत पौण, ता पाखंडी नै चीन्हत कौण। जाकी सहजै चूकै

आवागौण।

शब्द - (82)

ओ३म्–अलख–अलख तू अलख न लखणा, तेरा अनन्त इलोलूं। कौण सी तेरी करणी पूजै, कौण सैं तिहिं रूप संतूलूं।

शब्द - (83)

ओ३म्–जो नर घोड़ै चढै पाग न बांधै, ताकी करणी कौण बिचारूं। शुचियारा होयसी आय मिलसी, करड़ा दोजग खारूं। जीव तड़े को रिजक न मेटूं, मूवां परहथ सारूं। हाथ न धोवै पग न पखालै, नाहरसिंघ नर काजूं। जुग अनंत अनंत बरत्या, म्हे शून्य मंडल का राजूं।

शब्द - (84)

ओ३म्–मूंड मुंडायो मन न मुंडायो, मुंह अबखल दिल लोभी। अन्दर दया नहीं सुरकाने, निंदरा हड़ै कसोभी। गुरू गति छूटी टोट पड़ैला, उनकी आवा एकपख

सातो। वै करणी हूंता खूंधा, असी सहस नव लाख भवैला कुंभी दौरे ऊंधा।

शब्द - (85)

ओ३म्-भोम भली कृषाण भी भला, खेवट करो कमाई। गुरू प्रसाद काया गढ़ खोजो, दिल भीतर चोर न जाई। थलिये आय सतगुरू परकाश्यो, जोलै पड़ी लोकाई। एक खिण मे तीन भवन म्हे पोखां, जीवा जूण सवाई। करण समो दातार न हुवो, जिन कंचन बाहू उठाई। सोई कवीसा कवल नवेड़ी, जिण सुरह सुबछ दुहाई। मेर समो कोई केर न देख्यो, सायर जिसी तलाई। लंक सरीखो कोट न देख्यो, समंद सरीखी खाई। दशरथ सो कोई पिता न देख्यो,देवलदै सी माई। सीत सरीखी तिरिया न देखी, गरब न करीयों काई। हनमत सो कोई पायक न देख्यो, भीम जैसी सबलाई। रावण सो कोई राव न देख्यो, जिण चोहचक आन

फिराई। एक तिरिया कै राहा बेधी, लंका फेर बसाई। संखा मोहरा सेतम सेतूं, ताक्यूं बिलगै काई। ब्राह्मण था ते वेदे भूला, काजी कलम गुमाई। जोग बिहूंणा जोगी भूला, मुंडिया अकल न काई। इहिं कलयुग मैं दोय जन भूला, एक पिता एक माई। बाप जाणै मेरै हलीयो टोरै, कोहर सींचण जाई। माय जाणै मेरै बहूटल आवै, बाजै बिरद बधाई। म्हे शिंभू का फरमाया आया, बैठा तखत रचाई। दोय भुजडंडे परवत तोलां, फेरां आपण राई। एक पलक मैं सर्व संतोषा जीया जूण सवाई। जुगां जुगां को जोगी आयो, बैठो आसन धारी,। हाली पूछै पाली पूछै, यह कलि पूछण हारी । थली फिंरतो खिलेरी पूछै, मेरी गुमाई छाली। बांण चहोड़ पारधियो पूछै, किहिं अवगुण चूकै चोट हमारी। रहोरे मूर्खा मुग्ध गंवारा, करो मजूरी पेट भराई। है है जायो जीव न घाई । मैडी़ बैठो राजेन्द्र पूछै, स्वामी जी कती एक आयु हमारी।

चाकर पूछै ठाकर पूछै और पूछै कीर कहारी। सोक दुहागण तेपण पूछै लेले हाथ सुपारी। बांझ तिरिया बहु तेरी पूछै, किसी परापति म्हारी। त्रेता जुग में हीरा विणज्या, द्वापर गऊ चराई। वृन्दावन मैं बंसी बजाई, कलजुग चारी छाली। नव खेड़ी म्हे आगै खेड़ी, दशवैं कालंके की बारी। उत्तम देश पसारो मांड्यो, रमण बैठो जुवारी। एक खंड बैठा नवखंड जीता को ऐसो लहो जुवारी।

शब्द - (86)

ओ३म्–जुग जागो जुग जाग पिरांणी, कांय जागंता सोवो। भलकै बीर बिगोवो होयसी, दुसमन कांय लकोवो। ले कूंची दरबान बुलाओ, दिल ताला दिल खोवो। जंपो रे जिण जंप्यो जणीयर, जपसी सो जिण हारी। लह–लह दाव पड़ंता खेलो, सुर तेतींसा सारी। पवन बंधान काया गढ काची, नीर छलै ज्यूं पारी। पारी

बिनसै नीर ढुलैलो, ओपिंड काम न कारी। काची काया दृढ कर सींचो, ज्यूं माली सींचै बाड़ी। ले काया बासंदर होमो, ज्यूं ईंधन की भारी। शील स्नाने संजमे चालो, पाणी देह पखाली। गुरू के बचने निंव खिंव चालो, हाथ जपो जपमाली। वस्तु पियारी खरचो क्यूं नाहीं, किहिं गुण राखो टाली। खरचे लाहो राखे टोटो, बिबरस जोय निहाली। घर आगी इत गोवल बासो, कूड़ी आधो चारी। आज मूवा कल दूसर दिन है, जो कुछ सरै तो सारी। पीछै कलीयर कागा रोलो, रहसी कूक पुकारी। ताण थकै क्यूं हारयो नाहीं, मुरखा अवसर जौले हारी।

शब्द - (87)

ओ३म्–जिंह का उमग्या समाघूं, तिहिं पंथ के बिरला लागूं। बीजा चाकर बीरूं, रण शंख धीरूं। कबही झूझत रायूँ, पासै भाजत भायों। तातैं नुगरा झूझ न

कीयों।

शब्द - (88)

ओ३म्–गोरख लो, गोपाल लो, लाल गवाल लो, लाल लीलंग देवों। नवखंड पृथिवी प्रगटियो, कोई बिरला जाणत म्हारी आद मूल का भेवों।

शब्द - (89)

ओ३म्–उरधक चन्दा, निरधक सूरूं, नव लख तारा नेड़ा न दूरूं। नव लख चन्दा नव लख सूरूं, नव लख धंधू कारूं। तांह परेरै तेपण होता, तिंहका करूं बिचारूं।

शब्द - (90)

ओ३म्–चोईस चेड़ा कालिंग केड़ा,अधिक कलावंत आयसैं। वै फेर आसन, मुकर होय बैसैंला, नुगरा थान रचायसै। जाणत भूला महा पापी, बहु दूनियां भोलायसै। दिल का कूड़ा कुड़ीयारा, उपंग बात चलाय

सै। गुरू गहणा जो लेवै नाहीं, दशबंध घर बोसायसै। आप थापी महापापी, दग्धी परलै जायसै। सतगुरू कै बैड़ै न चढ़ै, गुरस्वामी नै भाय सै। मंत्र बेलु ऋध सिध कर सैं, दे दे कार चलायसै। काठ का घोड़ा निरजीव ता सरजीव कर सैं, तांनै दाल चरायसैं। अधर आसण मांड बैसैला, मूवा मड़ा हंसाय सैं। जां जां पवन आसण, पाणी आसण, चंद आसण, सूर आसण, गुरू आसण संभराथले। कहै सतगुरू भूल मत जाइयो, पड़ोला अभै दोजखे।

शब्द - (91)

ओ३म्-छंदे मंदे बालक बुद्धे, कूड़े कपटे ऋध न सिद्धे। मेरे गुरू जो दीन्ही शिक्षा,सर्व आलिङ्गण फेरी दीक्षा। जाण अजाण बहिया जब जब, सर्व अलिङ्गण मेटे तब तब। ममता हस्ती बांध्या काल, काल पर काले पसरत डाल। ध्यान न डोले मन न टले, अहनिश ब्रह्म

ज्ञान उच्चरै। काया पत नगरी मन पत राजा, पंच आत्मा परिवारूं। है कोई आछै मही मंडल शूरा, मनराय सूं झूझ रचायले। अथगा थगायले, अवसा बसायले, अनबे माघ पाल ले। सत-सत भाखत गुरू रायों, जरा मरण भो भागूं।

शब्द - (92)

ओ३म्-काया कोट पवन कुट वाली, कुकर्म कुलफ बणायो। माया जाल भरम का सकल, बहु जग रहीया छायों। पढ़ वेद कुरांण कुमाया जालों, दंत कथा जुग छायो। सिध साधक को एक मतो, जिन जीवत मुक्त दृढ़ायो। जुगां जुगां को जोगी आयो, सतगुरू सिद्ध बतायो। सहज स्नानी केवल ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी सुकृत अहल्यो न जाई। क्यूं क्यूं भणतां, क्यूं क्यूं सुणंता समझ बिना कुछ सिद्धि न पाई।

शब्द - (93)

ओ३म्–आद शब्द अनाहद बांणी, चवदै भवण रहया छल पाणी। जिहिं पाणी से इंड ऊपना, उपन्ना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी।

शब्द - (94)

ओ३म्–सहस्त्र नाम सांई भल शिंभु, म्हे उपना आद मुरारी। जद मैं रहयो निरालंभ हो कर, उतपति धंधू कारी। ना मेरै मायन ना मेरै बापन, मैं अपनी काया आप संवारी। जुग छतीसों शून्यहि बरत्या सतजुग माहीं सिरजी सारी। ब्रह्मा इन्द्र सकल जग थरप्या, दीन्ही करामात केती वारी। चन्द सूर दोय साक्षी थरप्या, पवन पवनेश्वर पवन अधारी। तदम्हे रूप कीयो मैनावतीयो, सत्यव्रत को ज्ञान उचारी। तदम्हे रूप रच्यो कामठीयो, तेतीसो की कोड़ हंकारी। जब मैं रूप धरयो बाराहि, पृथिवी दाढ़ चढ़ाई सारी। नरसिंह रूप धर

हिरण्यकश्यप मारयो, प्रहलादो रहियो शरण हमारी। बावन होय बलिराज चितायो, तीन पैंड कीवीं धरसारी। परशुराम होय क्षत्रियपन साध्यो, गर्भ न छूट्यो नारी। श्री राम शिर मुकुट बंधायो, सीता के अहंकारी। कन्हड़ होय कर बंसी बजाई गऊ चराई, धरती छेदी, काली नाथ्यो, असुर मार किया क्षयकारी। बुद्ध रूप गयासुर मारयो, काफर मार किया बेगारी। पंथ चलायो राह दिखायो, नौवर विजय हुई हमारी। शेष जंभराय आप अपरंपर, अबल दिन से कहियो। जांभा गोरख गुरू अपारा। काजी मुल्ला पढ़िया पंडित, निंदा करै गवारा। दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो, तो कहिया करो हमारा। इन्द्रपुरी बैकुण्ठे बासो, तो पावो मोक्षहि द्वारा।

शब्द - (95)

ओ३म्–बाद बिवाद फिटाकर प्राणी, छाडो मनहट मन का भाणो। कांही कै मन भयो अंधेरो, कांही सूर

उगाणो। नुगरा कै मन भयो अंधेरो, सुगरा सूर उगाणो। चरण भी रहिया, लोयण झुरिया, पिंजर पड्यो पुराणो। बेटा बेटी बहन रू भाई, सबसै भयो अभाणो। तेल लियो खल चोपै जोगी, रीता रहीयो घाणो। हंस उडाणो पंथ बिलब्यो, कीयो दूर पयाणो। आगै सुरपति लेखो मांगै, कहि जीवड़ा के करण कमाणो। जीवड़ा नै पाछो सुझण लागो सुकरत नै पछताणो।

शब्द - (96)

ओ३म्–सुण गुणवंता, सुण बुधवंता, मेरी उत्पत्ति आद लुहारूं। भाठी अंदर लोह तपीलो, तंतक सोना घड़ै कसारूं। मेरी मनसा अहरण, नाद हथोड़ो, शशीयर सूर तपीलो। पवन अधारी खालूं। जेथे गुरू का शब्द मानीलो, लंघिबा भव जल पारूं। आसण छोड़ि सुखासण बैठो, जुग–जुग जीवै जंभ लुहारूं।

शब्द - (97)

ओ३म्–विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी, जो मन मानै रे भाई। दिनका भूला रात न चेता, कांय पड़ा सूता, आस किसी मन थाई। तेरी कुड़ काची लगवाड़ घणो छै, कुशल किसी मन भाई। हिरदै नाम विष्णु को जंपो, हाथे करो टवाई। हरि पर हर की आण न मानी, भूला भूल जपी महमाई। पाहन प्रीत फिटाकर प्राणी, गुरू बिन मुक्ति न जाई। पंच क्रोड़ी ले प्रहलाद उतरियो, जिन खर तर करी कमाई।सात क्रोड़ी ले राजा हरिचंद उतरियो, तारादे रोहिताश हरिचन्द हाटोहाट बिकाई। नव क्रोड़ी राव युधिष्ठर ले उतरियो, धन धन कुन्ती माई। बारा क्रोड़ी समाहन आयो, प्रहलादा सूं वाचा कवल जु थाई। किसकी नारी वस्तु पियारी, किसका बहिनरू भाई। भूली दुनिया मर मर जावै, ना चीन्हो सुरराई। पाहण नाऊं लोहा सक्ता, नुगरा चीन्हत काई।

शब्द -(98)

ओ३म्–जिहि गुरू कै खिणही ताऊं, खिणही सीऊ, खिणही पवणा, खिणही पाणी, खिणही मेघ मण्डाणो। कृष्ण करंता बार न होई,थल सिर नीर निवाणो। भूला प्राणी विष्णु जंपो रे, ज्यूं मौत टलै जिरवाणो। भीगा है पण भेद्या नाहीं, पांणी मांहि पखाणो। जीवत मरो रे जीवत मरो, जिन जीवन की बिध जांणी। जे कोई आवै हो हो कर, तो आप जै हुईये पांणी। जाकै बहुती नवणी, बहुती खवणीं बहुती क्रिया समांणी। जांकी तो निज निर्मल काया जोय जोय देखो, ले चढ़ियो अस्मानी। यह मढ देवल मूल न जोयबा, निज कर जपो पिराणी। अनन्त रूप जोवो अभ्यागत, जिहिंका खोज लहो सुर बाणी। सेतम सेतूं, जेरज जेरू, इंडस इंडू, अइयालो उरध जे खैणी।

शब्द - (99)

ओ३म्–साच सही म्हे कूड़ न कहिबा, नेड़ा था पण दूर न रहीबा। सदा सन्तोषी सत उपकरणा, म्हे तजीया मान अभिमानू। बस कर पवणा बस कर पाणी, बस कर हाट पटण दरवाजों। दशे दवारे ताला जड़िया, जो ऐसा उसताजों। दशे दवारे ताला कूंची, भीतर पोल बणाई। जो आराध्यो राव युधिष्ठर, सो अराधो रे भाई। जिहिं गुरू कै झुरैन झुरबा, खिरैन खिंरणा, बंक तृबंके, नाल पै नालै। नैंणे नीर न झुरबा, बिन पुल बंध्या बांणो। तज्या आलिंगण तोड़ी माया, तन लोचन गुण बांणो। हालीलो भल पालीलो सिध पालीलो, खेड़त सूना राणो।

शब्द - (100)

ओ३म्–अर्थूं गर्थूं साहण थाटूं, कूड़ा दीठो ना ठाटों। कूड़ी माया जाल न भूली रे राजेन्द्र, अलगी रही ओजूं

की बाटों। नवलख दंताला बार करीलो, बार करे कर बंद करीलो। बंद करे कर दान करीलो, दान करे कर मन फूलीलो। तंत मंत बीर बेताल करीलो, खायबा खाज अखाजू। निरह निरंजन नर निरहारी, तऊ न मिलबा झंझा भाग अभागूं।

शब्द - (101)

ओ३म्–नितही मावस नित संकरांति, नितही नवग्रह वैसैं पांति। नितही गंग हिलोले जाय,सतगुरू चीन्है सहजै न्हाय। निरमल पाणी निरमल घाट निरमल धोबी मांड्यो पाट, जेयो धोबी जाणे धोय घर में मैला वस्त्र रहै न कोय। एक मन एक चित साबण लावै, पहरंतो गाहक अति सुख पावै। ऊंचै नीचे करै पसारा, नाहीं दूजै का संचारा। तिल में तेल पहुप में बास, पांच तत में लियो प्रकाश। बिजली कै चमकै आवै जाय, सहज शून्य में रहै समाय। नै यो गावै न यो गवावै, सुरगे जाते

बार न लावै। सतगुरू ऐसा तत बतावै,जुग जुग जीवै बहुरि न आवैं।

शब्द - (102)

ओ३म्–विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै, धर्म हुवै पापां छूटीजै। हरि पर हरि को नाम जपीजै, हरियालो हरि आण हरूं। हरी नारायण देव नरूं। आशा सास निरास भईलो, पाईलो मोक्ष दवार खिंणू।

शब्द - (103)

ओ३म्–देखि अदेख्या, सुण्या असुण्या, क्षिमारूप तप कीजै। थोड़े माहि थोड़ेरो दीजै, होते नाहिं न कीजै। कृष्णी मया तिहूं लोका साक्षी, अमृत फूल फलीजै। जोय जोय नांव विष्णु के दीजै, अनन्त गुणा लिख लीजै।

शब्द - (104)

ओ३म्–कंचन दांनू कछु न मानूं, कापड़ दानू कछु न

मांनू। चोपड़ दानू कछु न मानू, पाट पटंबर दांनू कछु न मानू। पंच लाख तुरंगम दानू कछु न मांनू, हस्ती दानू कछु न मांनू। तिरिया दानू कछु न मांनू, मानू एक सुचील सिनांनू।

शब्द - (105)

ओ३म्–आप अलेख उपन्ना शंभू, निरह निरंजन धंधू कारूं। आपै आप हुआ अपरंपर, न तद चन्दा नै तद सूरूं। पवण न पाणी धरती आकाश न थीयों। नातद मास न वर्ष न घड़ी न पहरूं, धूप न छाया ताव न सीयों। न त्रिलोक न तारा मंडल, मेघ न माला वर्षा थीयों। न तद जोग नक्षत्र तिथि न बारसीयो, ना तद चवदश पूनो मावसींयो। न तद समद न सागर न गिरि न पर्वत, ना धौलागिर मेर थींयो। ना तद हाट न बाट न कोट न कसबा, बिणज न बाखर लाभ थीयों। यह छत धार बड़े सुलतानो, रावण राणा ये दिवाणा हिन्दू मुसलमानु।

दोय पंथ नाही जूवा जूवा। नातद कामन करसण, जोगन दर्शन। तीर्थ वासी ये मसवासी, ना तद होता जपिया तपिया। न खच्चर हींवर बाज थीयो। नातद शूर न वीर न खड़ग न क्षत्री, रण संग्रांम न जूझ न थीयों। ना तद सिंह न स्यावज मिरग पंखेरूं, हंस न मोरा लेल सूवो। रंग न रसना, कापड़ चोपड़, गोहूं चावल भोग थीयों। माय न बाप न बहण न भाई, ना तद होता पूत धीयों। सास न शब्दूं, जीव न पिंडू,नातद होता पुरूष त्रियों। पाप न पुण्य न सती कुसती, नातद होती मया न दया। आपै आप ऊपनां शम्भू, निरह निरंजन धन्धू कारूं। आपो आप हुआ अपरंपर, हे राजेन्द्र लेह विचारूं।

शब्द - (106)

ओ३म्–सुंणरे काजी सुंणरे मुल्ला सुणियो लोग लुगाई। नर निरहारी एक लवाई, जिन यो राह फुरमाई। जोर

जरब करद जे छाड़ो, तो कलमा नाम खुदाई। जिनकै साच सिदक इमान सलामत, जिण यो भिस्त उपाई।

शब्द - (107)

ओ३म्–सहजे शीले सेज बिछायों, उनमन रह्या उदांसू। जुगे जुगन्तर भवे भवन्तर, कहो कहांणी कासूं। रवि ऊगा जब उल्लू अन्धा, दुनियां भया उजासूं। सतगुरू मिलियो सतपंथ बतायो भ्रांत चुकाई, सुगरां भयो बिसवासूं। जां जां जांण्यो, तहां प्रवाणो। सहज समाणो, जिहिं के मन की पूगीं आसूं। जहां गुरू न चीन्हों पंथ न पायो, तहां गल पड़ी परासूं।

शब्द - (108)

ओ३म्–हालीलो भल पालीलो सिध पालीलो,खेड़त सूना राणो। चन्द सूर दोय बैल रचीलो, गंग जमन दोय रासी। सत संतोष दोय बीज बीजीलो, खेती खड़ी अकासी। चेतन रावल पहरै बैठे, मृगा खेती चर नहीं

जाई। गुरू प्रसादे, केवल ज्ञाने, ब्रह्मज्ञाने, सहजे स्नाने, यह घर ऋध सिध पाई।

शब्द - (109)

ओ३म्–देखत भूली को मनमानै, सेवै बिलोवै बाझ सनानै। देखत भूली का मन चेवै, भीतर कोरा बाहर भेवै। देखत भूली को मन मानै, हरि पर हर मिलियो शैताने। देखत भूली को मन चेवै, आक बखांणैं थंदे मेवै। भूलालो भल भूलालो, भूला भूल न भूलूं। जिंहि ठूंठड़िये पान न होता, ते क्यूं चाहत फूलूं।

शब्द - (110)

ओ३म्–मथुरा नगर की राणी होती, होती पाटमदे राणी। तीरथ वासी जाती लूटे, अति लूटे खुरसाणी। मानक मोती हीरा लूट्या, जाय बीलूधा दांणी। कवले चूकी बचने हारी, जिहिं औगुण ढांची ढोवै पांणी। विष्णु कूं दोष किसो रे प्राणी, आपे खता कमाणी।

शब्द - (111)

ओ३म्–खरड़ ओढ़ीजै, तूंबा जीमीजैं, सुरहै दुहीजै, कृत खेत की सींव में लीजैं, पीजै ऊंडा नीरूं। सुर नर देवा बंदी खाने, तित उतरीया तीरूं। भोलम भालम टोलम टालम ज्यूं जाणो त्यूं आणो। म्हे बाचा दइ प्रहलादा सूं सुचेलो गुरू लाजै, कोड़ तेतींसू बाड़ै दीन्ही तिनकी जात पिछाणो।

शब्द - (112)

ओ३म्–जांके पंथ का भांजणा, गुरू का नींदणा। स्वामी का दुस्मणा, कुफर ते काफरा। कुमली कुपातूं, कुचिला कुधातू। हड़ हड़ा, भड़ हड़ा, दाणबे दूतबा, दाणबे भूतबा, राकसा बोकसा, जांका जन्म नहीं पर कर्म चंडालूं। और कूं जिभै कर आप कूं पोखणा, जिहिंकी रूवाली दीजसीं, दौरे घुप अंधारौं। तान बे तानबा,छान बे छानबा,तोड़ बे तोड़बा,कूक बे पुकारबा,

जांकी कोई न करबा सारूं।

शब्द - (113)

ओ३म्–ईमा मोमण चीमा गोयम, महंमद फुरमानी। उरका फुरका निवाज फरीजां,खासा खबर बिनाणी। इला रास्ती ईमा मोमन, मारफत मुल्लाणी।

शब्द - (114)

ओ३म्–सुरनर तणो सन्देसो आयो, सांभलीयो रे जाटो। चांदणै थकै अंधेरै क्यूं चालो, भूल गया गुरू बाटो। नीर थकै घट थूल क्यूं राखो, सबल बिगोवो खाटो। मागर मणिया क्यूं हाथि बिसाहो, कांय हीरा हाथ उसाटो। सुरनर तणो संदेसो आयो, सांभलियो रे जाटो।

शब्द - (115)

ओ३म्–म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियों, मेरा कारण किरिया देखो। बिन्दो ब्योहरो ब्योर विचारो, भूलस

नाही लेखों। नदिये नीरूं, सागर हीरूं, पवणा रूप फिरै परमेश्वर। बिबै बेला निश्चल थाघ अथाघूं। उमग्या समाघू, ते सरवर कित नीरूं। गहर गंभीरू,खिण एक सिधपुरी विश्राम लियों, अब जु मंडल भई अवाजूं। म्हे शून्य मंडल का राजूं।

शब्द - (116)

ओ३म्–आयसां मृगछाला पावोड़ी कांय फिरावो, मतूंत आयसां ऊगंतो भांण थंभाऊं। दोनों परबत मेर उजागर, मतूंत अधबिच आन भिड़ाऊं। तीन भुवन की राही रूक्मण, मतूंत थल सिर आंण बसांऊं। नवसै नदी निवासी नाला, मंतूत तो थल सिर आन बहाऊं। सीत बहोड़ी लंका तोड़ी ऐसो कियो संग्रामो, जां बांणै म्हे रावण मारयो। मतूंत आयसां गढ़ हथनापुर सै आन दिखाऊं। जो तू सोने की मृगी कर चलावै, मतूंत घन पाहण बरसाऊं। मृगछाला पावोड़ी कांय फिरावो,

मंतूतो उंगतो भाण थंभाऊं।

शब्द - (117)

ओ३म्-टूका पाया मगर मचाया, ज्यूं हंडियाया कुत्ता। जोग जुगत की सार न जाणी, मूंड मुंडाय बिगूता। चेला गुरू अपरचै खीणा, मरते मोक्ष न पायों।

शब्द - (118)

ओ३म्-सुरगा हूंते शम्भू आयो, कहो कूंणा के काजै। नर निरहारी एकलवाई, परगट जोत विराजै। प्रहलादा सूं वाचा कीवी, आयो बारां काजै। बारा मैं सूं एक घटै तो, सू चेलो गूरू लाजै।

शब्द - (119)

ओ३म्-विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी, पैंके लाख उपाजूं। रतन काया बैकूंठे बासो, तेरा जरा मरण भय भाजूं।

शब्द - (120)

ओ३म्-विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणीं, इस जीवन कै

हावै। क्षण क्षण आव घटंती जावै, मरण दिनों दिन आवै। पालटीयो गढ़ कांय न चेत्यो, घाती रोल भनावै। गुरू मुख मुरखा चढ़ै न पोहण, मनमुख भार उठावै। ज्यूं ज्यूं लाज दूनी की लाजै, त्यूं त्यूं दाब्यो दावै। भलियो होयसो भली बुध आवै, बुरियो बुरी कमावै।